फरवरी-२०२१ ◆ वर्ष ९ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

फरवरी-२०२१

बिन कारण के जग में, कोई कार्य न होता,
बिना कष्ट अनुभूति, बालक कभी न रोता।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश को, देखो वहाँ लिखा है,
ईश्वर नहीं बनाता तो, यह जगत् न होता।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० ११२

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
MDH Shahi Paneer masala
MDH Chunky Chat masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Chana masala
MDH Peacock Kasoori Methi
MDH Garam masala
MDH Kitchen King
MDH Sambhar masala
MDH Sabzi masala
MDH Deggi Mirch
Chilli Powder
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mail : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD.1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
मार्गशीष कृ.
विक्रम संवत्
२०७७
दयानन्दाब्द
१९६

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

February - 2021

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४	वेद सुधा
०५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२०
०६	स्वस्य च प्रियमात्मनः
१३	महाराणा का उदयपुर
१६	क्या अण्डा सेवन शाकाहारी है?
१८	स्मृतिशेष पं. रतिराम शर्मा
२०	वरिष्ठजनों के अधिकार
२६	कथा सरित - माँ
२७	स्वास्थ्य
३०	प्रार्थना ईश्वर से ही करें

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - १०

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

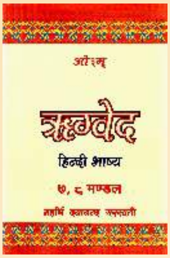

ओ३म्

वेद सुधा

जनया दैव्यं जनम्

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि। ज्योतिष्मतः पथो रक्षधियाकृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। - ऋग्वेद १०।४३।६

मनुष्य बनने का पहला साधन है-**'तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि।'**
संसार का ताना बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर, अर्थात् तेरे समस्त कर्म ज्ञानमूलक होने चाहिए। अज्ञान, अन्धकार तो मृत्यु के प्रतिनिधि हैं। अन्धकार से उल्लू को प्रीति हो सकती है, मनुष्य को नहीं। मनुष्य बनने के लिए अन्धकार से परे हटना होगा। ऋषि ठीक ही कहते हैं-

तमसो मा ज्योतिर्गमय। -शत. १४/३/१/३०

अन्धकार से हटाकर मुझे प्रकाश प्राप्त करा।

अन्धकार में कुछ नहीं सूझता, सब क्रियाएं रुक जाती हैं, अतः वेद कहता हैं- **भानुमन्विहि।**
प्रकाश के पीछे चल।

प्रकाश का अनुसरण करनामात्र ही पर्याप्त नहीं है। कुछ और भी आवश्यक होता है। प्रकाश के पीछे तभी चला जा सकेगा, जब प्रकाश स्थिर होगा। यदि प्रकाश विद्युच्छटा के समान चचंल हो, तो उसका अनुकरण कैसे हो सकता है, इस आशय को लेकर वेद ने दूसरा उपाय बताया-

ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
प्रकाश के मार्गों की रक्षा कर, उनमें अपनी बुद्धि से परिष्कार कर।

संसार के सभी देशों में रोशनी बुझानेवालों के लिए दण्ड का विधान है, किन्तु संसार की गति अत्यन्त विचित्र है। संसार में ऐसे भी हुए हैं और कदाचित् आज भी ऐसे मनुष्याकारधारी प्राणी हैं, जो प्रकाश का नाश करते रहे और कर रहे हैं। उन्हें क्या कहोगे, जिन्होंने सिकन्दरिया का विशाल पुस्तकालय जला दिया। उन्हें क्या कहोगे, जो वर्षों भारत के ज्ञान भण्डार से हमाम=स्नानघर गर्म करते रहे? उनका क्या नाम धरोगे, जिन्होंने चित्रकूट का करोड़ों रुपयों का पुस्तकालय अग्निदेव की भेंट कर डाला? ये सभी नरतनधारी थे, किन्तु क्या ये मनुष्य नाम के भी अधिकारी थे, इसमें सन्देह है। मनुष्य बनाने का साधन नष्ट करने वाले मनुष्य कैसे? वे तो कोई मनुष्यता के वैरी थे। उनको क्या कहोगे, जो आज भी ज्ञान भण्डार को जलदेवता के अर्पण कर रहे हैं? उनको क्या कहोगे, जो प्रकाश को दूसरों तक नहीं जाने देते, अपने तक रोक रखते हैं? ये सब......। लाखों ज्ञानी ज्ञान अपने साथ ले जाते हैं। वह ज्ञान किस काम का? वेद कहता है- ज्योतिष्मतः पथो रक्ष- ज्ञानमार्गों की रक्षा कर। पूर्वजों से प्राप्त ज्ञानराशि की रक्षा कर।

मानव! तू वायुयान में बैठकर आकाश की ओर उड़ जाता है, अन्तरिक्ष की सैर करता है। ज्ञात है यह कैसे सम्भव हो सका? वेद के 'अन्तरिक्षे रजसो विमानः' की बात नहीं कहूंगा और न ही कहूंगा रामायण के पुष्पक विमान की बात। आज के विमान का बयान सुनाऊंगा। किसी भद्र के चित्त में पक्षी को उड़ता देख उड़ने की समाई। उसने कृत्रिम पंख लगाकर उड़ने की ठानी। बेचारा गिर पड़ा, अंग भंग हो गये। अगलों ने उसकी चेष्टा को स्मरण रखा, उसके यत्न को मूलाधार बनाया; साथ ही उसमें अपना मष्तिष्क लगाया। अब सोच मानव! यदि उस प्रथम त्यागी के ज्ञान को भुला दिया जाता, तो नये सिरे से यत्न करना पड़ता, फल क्या होता, वायुयान न बन पाता, अतः वेद का यह कहना 'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष' बहुत ही सारगर्भित है।

हाँ! यदि उस पहले उड़ने वाले ने जितना यत्न किया था, उतने की ही रक्षा की जाती, उसमें अपना भाग न डाला जाता, अपना दिमाग न लड़ाया जाता तो भी वायुयान न बन पाता, अतः वेद ने ठीक ही कहा- धिया कृतान्- प्रकाश की रक्षा अवश्य कर किन्तु उसमें अपना भाग भी डाल, अन्यथा दीपक बुझ जाएगा।

वैदिकों ने इस तत्व को समझकर प्रथम संस्कृति=वेद तथा उसके अंगोपांगों की रक्षा करने में प्राणप्रण से यत्न किया है, अतः वेद के शब्दों में कहो-

नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः। -ऋ. १०/१४/२५

पूर्वज ऋषियों को नमस्कार।

ज्ञान का पर्यवसान अनुष्ठान में होता है। ज्ञान का अनुसरण करने के लिए ज्ञान के रक्षण और परिवर्धन की नितान्त आवश्यकता है, किन्तु ज्ञान का प्रयोजन? 'ज्ञान ज्ञान के लिए' यह सिद्धान्त प्रमादियों का है। ज्ञान की सफलता कर्म में है, अतः वेद कहता है–

'अनुल्बणं वयत जोगुवामपः।'

ज्ञानानुसार कर्म करने वालों के उलझनरहित कर्मों को करो। लोकोक्ति है– 'लोकोऽयं कर्मबन्धनः'– कर्म बन्धन का कारण है। वेद कहता है कर्म तो अनिवार्य हैं, उनसे छूट नहीं सकते, अतः ऐसे कर्म करो जो उलझन को मिटाने वाले हों न कि उलझन के बढ़ानेवाले। जो कर्म ज्ञानविरहित होंगे, ज्ञान के विपरीत होंगे, वे अवश्य उलझन पैदा करेंगे, अतः ऐसा न कर जिससे संसार की उलझनें और बढ़ें। यह तो पहले ही बहुत उलझा हुआ है।

तुझे सूझता नहीं कि कौन-सा कर्म 'अनुल्बण' है और कौन सा 'उल्बण'। तुझे कोई अंगुलि पकड़कर बताए। अच्छा, जहां तू रहता है, वहां कोई ब्रह्मनिष्ठ भी है या नहीं? उन ब्रह्मनिष्ठों का व्यवहार देखना, जो सत्यप्रिय, मधुरभाषी, निष्काम, सर्वहितकारी हों, देख, वे कैसे करते हैं। उनका अनुकरण कर, किन्तु ज्ञान को हाथ से न जाने देना।

इन साधनों का अनुष्ठान करके निस्सन्देह मनुष्यता सुलभ हो जाती है, किन्तु मनुष्यत्व के साथ वेद ने एक कर्तव्य भी लगा दिया है। वह है–

'जनया दैव्यं जनम्' - दैव्य जन पैदा कर।

मनुष्य को मनुष्यता की सारी सामग्री समाज से मिली है, अतः उसे चाहिए कि वह भी समाज को कुछ दे जाए, समाज का सारा कार्यभार देवों के सहारे चलता है। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि ऐसे सर्वहितकारी देवों का कुछ प्रत्युपकार अवश्य करे। इस भाव को लेकर वेद ने कहा–

जनया दैव्यं जनम्।

दैव्य– देवहितकारी जन को कौन पैदा करेगा? क्या राक्षस, दस्यु? कभी नहीं, अतः देवजनहितकारी सन्तान उत्पन्न करने के लिए मनुष्य को स्वयं देव बनना पड़ेगा, अर्थात् मनुष्य बनकर जब सन्तान उत्पन्न करने में प्रवृत्त होने लगे, तब उसके हृदय में कुकाम की कुवासना न हो, वरन् जनसमाज, नहीं नहीं देवसमाज के हित की भावना हो।

वेद मनुष्य बनाकर चुपके से देवत्व के मार्ग पर ला खड़ा करता है।

साभार - स्वाध्याय सन्दीप

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२०

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए।(नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ स			न		२	मु		त्व	
३		ण्टा		४	भि		वे		
५	च		६	ग			७ सा		

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. चित्त की एकाग्रता को क्या कहते हैं ?
२. भूखे प्यासे को जैसे अन्न जल के अतिरिक्त कुछ अच्छा नहीं लगता, वैसे जिसकी, मुक्ति के साधन व मुक्ति के अतिरिक्त अन्य में प्रीति नहीं होती, उसे क्या कहते हैं ?
३. मुमुक्षु नित्यप्रति न्यून से न्यून कितने समय ध्यान करे ?
४. मृत्यु दुःख से त्रास क्या कहलाता है ?
५. क्लेश कितने प्रकार के हैं ?
६. सुख में प्रीति क्या कहलाती है ?
७. जो ईश्वर के लोक में निवास को मुक्ति मानते हैं, वह क्या कहलाती है ?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०२१

स्वस्य च प्रियमात्मनः

महर्षि मनु ने धर्म को परिभाषित करते हुए लिखा है
'वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
यहाँ आदि विधान निर्माता ने धर्म की चार कसौटियां दी हैं। प्रथम- धर्म वही है जो वेदानुकूल है। यह सर्वोत्कृष्ट परिभाषा है। परन्तु कोई यह तर्क (कुतर्क) दे सकता है कि हम तो वेद को मानते ही नहीं बल्कि यहाँ तक कि वेद को छोडिये, हम तो ईश्वर को ही नहीं मानते। तब यह कसौटी उसको मान्य नहीं होगी। द्वितीय कसौटी स्मृतियों की व्यवस्थाओं की है पर यही तर्क वे स्मृतियों के बारे में दे सकते हैं। जहां तक तीसरी कसौटी अर्थात् महापुरुषों के सदाचरण का प्रश्न है वहां भी भिन्न महापुरुषों की भिन्न शिक्षाएं और वे शिक्षाएं भी अनेक बार एक-दूसरे के विपरीत होने के कारण विवाद रहित नहीं हो पातीं तब चौथी कसौटी ऐसी है जिसके विरुद्ध कोई तर्क नहीं दिया जा सकता। व्यक्ति किसी भी मत-मजहब में विश्वास रखता हो अथवा विशुद्ध नास्तिक हो, प्राकृतिक न्याय और सरल तर्क पर आधारित इस कसौटी की अवहेलना नहीं कर सकता। अतः इस आलेख में इसी को हम प्रमुखता देंगे। कसौटी व्यक्ति की निज आत्मा है। प्रत्येक व्यक्ति जब कोई कार्य करता है तो उसके पीछे उसके विचार ही प्रेरणा होते हैं। जो लोग आत्मा के अस्तित्व को न मानते हों वे इसे चेतना तो कहेंगे ही। कुछ भी नाम दें पर यह मानना ही पड़ेगा कि अगर व्यक्ति मनुष्य की श्रेणी में परिगणित है तो उसका प्रत्येक कार्य एक सोच से प्रेरित होता है। जब व्यक्ति अकेला है और उसका कोई कार्य किसी अन्य को प्रभावित नहीं कर रहा तो वह मनमाना व्यवहार करने में स्वतन्त्र भी हो तो कोई आपत्ति नहीं, यद्यपि उसका यह व्यवहार उसको स्वयं को हानि पहुंचा सकता है। अतः श्रेयस्कर तो यही है कि वह अपने प्रति भी श्रेष्ठ आचरण करते हुए वैयक्तिक उन्नति करे। भारतीय मनीषा ने वैयक्तिक उन्नति के लिए पांच स्वर्णिम सूत्र दिए हैं, जिन्हें नियम का नाम दिया गया है- शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान। वर्णनातीत ही है कि जो इन पर आचरण करता है वह किस प्रकार मनुष्य से देवता बन जाता है, यह इस आलेख का केन्द्रीय विषय नहीं है,अतः इसकी व्याख्या में नहीं जायेंगे।
इसी प्रकार जो दूसरा समुच्चय है और जिसे यम का नाम दिया गया है वह सामाजिक व्यवहार-विनिमय को नियंत्रित करता है, अतः अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह। पुनः कहूँगा कि इनकी विवेचना का यहाँ अवकाश नहीं है पर दावा कर दूँ तो समीचीन होगा कि जिस भी समाज में जिसमें चाहे कितने भी भिन्न-भिन्न मत-मजहब वाले लोग रहते हों, जितनी भी उनकी उपासना पद्धति हों, जितने भी उनके आराध्य देव या ईश्वरीय ग्रन्थ हों, उस ऐसे समाज में यदि यमों का पालन किया जाता है तो उससे आदर्श कोई समाज हो ही नहीं सकता। कोई घृणा,द्वेष और दूसरे का अहित करने की भावना उठ ही नहीं पायेगी, तो निःसंदेह संघर्ष शून्य ही होगा। संक्षेप में कहें तो, उस समाज से मार-काट समाप्त, अंधविश्वास तथा छल-कपट समाप्त, सबकी अस्मिता,संपत्ति व जीवन की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित, व्यभिचार तथा बलात्कार पूर्ण समाप्त, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब तथा इसी प्रकार की समस्त खाइयां समाप्त हो जायेंगी। कहिये कैसा होगा यह समाज? क्या आप इसमें नहीं रहना चाहेंगे?
अहिंसा की स्थापना के लिए सर्व प्रथम आपको द्वेष-भाव का त्याग करना होगा। जैसे ही आप द्वेष-भाव को त्यागेंगे तो जो कल तक आपको दुश्मन लगते थे वे मित्र लगने लगेंगे। सत्य की स्थापना के लिए जैसे ही आप झूँठ छल-कपट को त्यागेंगे' कल तक जिन मुद्दों व कार्यक्रमों को आप अपना करणीय कर्तव्य मानते थे उनकी निस्सारता आपकी समझ में आ जायेगी।

एक बड़ा सुन्दर सारगर्भित श्लोक है –

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्। आत्मवत्सर्वभूतेषु य: पश्यति स पण्डित:।।

अर्थात् जो परायी स्त्रियों में मातृ-भाव रखता हो, पराये धन को मिट्टी के टुकड़े के समान समझता हो तथा सभी प्राणियों में आत्मभाव रखता हो अर्थात् अपना जैसा ही समझता और मानता हो वही ज्ञानी पुरुष है।

आप विचार करें कि जैसे ही आप समाज में अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य (इन्द्रिय संयम) तथा अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना) जैसे सद्गुणों को संस्थापित करने में सफल हो पाते हैं सारे अपराध और दंगे स्वतः समाप्त हो जाते हैं। आर्य जाति भयंकर अपमान, शोषण, अत्याचार के सैकड़ों वर्ष की निरंतर विपरीत धारा के बावजूद आज भी अपेक्षाकृत संयमित तथा सौहार्द से युक्त है उसके पीछे उनका उक्त सद्गुणों से पूरित होने का अभ्यास ही है। निश्चित ही उक्त उपाय का अवलंबन कर जो समाज गतिशील होगा वह आदर्श समाज होगा।

परन्तु इस उपाय को भी आप पूर्वाग्रह से युक्त हो, भारतीय मान कर अपनाने से इनकार करदें तो भी मनु की चौथी कसौटी को तो आप नहीं नकार सकते, क्योंकि यह प्राकृतिक सहज न्याय पर आधारित है।

वहां कहा है जो आपकी आत्मा को प्रिय लगे, आपको प्रिय लगे उसी का पालन करो, यही धर्म है। वाह! इससे कौन इनकार कर सकता है। परन्तु इसका अर्थ समझना आवश्यक है कि जैसा आपको प्रिय है अर्थात् जैसा व्यवहार आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आप दूसरों के साथ करें। बस इतना करिए- आपका परिवार, समाज, राष्ट्र समस्त प्रकार की विषमताओं और बाधाओं से मुक्त हो जाएगा। यह गारंटीड़ है।

'स्वस्य च प्रियमात्मनः' का यह सूत्र सार्वकालिक है। इसका कोई अपवाद नहीं है। इसे कहीं भी घटा लें सौ प्रतिशत सकारात्मक परिणाम आएगा। आप चाहते हैं कि अन्य लोग आपको सम्मान दें तो आपको भी उन्हें सम्मान देना होगा। आप नहीं चाहते कि आपका साथी विद्यार्थी आपकी कोई सामग्री चुराए तो आपको भी इस पापकर्म से विरत् रहना होगा। आप नहीं चाहते कि आपकी माता-बहिन को कोई कुदृष्टि से देखे तो आप पर भी यही बंदिश लागू होती है। आप चाहते हैं कि कोई आपको गाली न दे क्योंकि यह आपको अच्छा नहीं लगता तो यह तब तक संभव नहीं है जब तक आप स्वयं किसी को भी गाली देना छोड़ न दें। आप अपनी उपासना पद्धति को श्रेष्ठ मानते हैं तो अन्य की उपासना पद्धति का अपमान करके साम्यभाव संभव नहीं। संक्षेप में, इस कसौटी को आप कहीं घटा लें। आदर्श समाज की स्थापना में 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' की आवश्यकता आपको दिखेगी।

इसीलिए महर्षि दयानंद जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' की महत्ता को उकेरित करते हुए लिखा-'अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूँगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।' अगर लोग इस भाव का अनुसरण करने लगें तो सर्वत्र शान्ति, भाईचारे का साम्राज्य स्थापित होने में क्या कमी रह जायेगी? रामायणकालीन समाज इसका उदाहरण है।

महर्षि वाल्मीकि रामायण में अयोध्यावासियों का वर्णन करते हुए लिखते हैं- उस श्रेष्ठ नगर में सब मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, बहुत शास्त्रों के ज्ञाता, अपने-अपने धनों से संतुष्ट, लोभरहित और सत्यवादी थे,..........गौ, अश्व, धन-धान्य आदि से रहित कोई नहीं था, उस अयोध्या में कहीं भी कामी, कंजूस, क्रूर, अविद्वान् और नास्तिक नहीं देखा जा सकता था, सब मनुष्य और स्त्रियाँ धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, प्रसन्न, स्वभाव और आचार से महर्षियों के समान निर्मल थे............आदि। ऐसा श्रेष्ठ समाज कैसे बना? यह यम-नियमों की पालना तथा 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' के स्वर्णिम सूत्र को धारण करने का चमत्कार था।

वर्तमान में विश्व में सर्वत्र इस सूत्र की उपेक्षा करने से तृतीय विश्वयुद्ध के आसार बनते जा रहे हैं। नफरत के अंकुर वृक्ष बन गए हैं। एक वर्ग की सोच है कि वे चाहे दूसरों से अमर्यादित तथा क्रूर व्यवहार करलें पर उन पर अंगुली उठाने का किसी को अधिकार नहीं है। यह सोच सारी मुसीबतों का आधार बन गयी है।

आज कल सहिष्णुता तथा असहिष्णुता को लेकर गहन बहस चलती रहती है। यहाँ भी यही बात महत्वपूर्ण है अगर आप चाहते हैं कि कोई आपके अभिव्यक्ति के अधिकारों का सम्मान करते हुए आपके प्रति सहिष्णुता दिखाए तो यह तभी संभव है जब ऐसा ही व्यवहार आप उसके प्रति करेंगे। एक उदाहरण देता हूँ। एक पुस्तक 'रंगीला रसूल' एक वर्ग के इतने विक्षोभ का कारण बन गयी कि इसके प्रकाशक को तत्कालीन उच्च न्यायालय से उन्मुक्ति मिलने के पश्चात् भी इस वर्ग ने यह नहीं समझा कि इसमें वही सब लिखा था जो कि उनके अपने धर्मशास्त्रों में लिखा है, और इन्होंने उक्त पुस्तक के प्रकाशक का वध कर दिया। उक्त पुस्तक में उन्हें अपने आराध्य का

अपमान दिखा परन्तु जिस पुस्तक 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी' की प्रतिक्रिया में उक्त पुस्तक लिखी गयी थी उसमें इनके साथियों ने दूसरों के आराध्य पर जो कीचड़ उड़ेली थी वह नजर नहीं आयी। यह मनःस्थिति 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है। मेरा धर्म, मेरा ईश्वर, मेरे आराध्य सर्वश्रेष्ठ हैं, उनका लिखा अकाट्य रूप से मान्य है, बुद्धि का उस क्षेत्र में प्रयोग, तर्क-वितर्क अस्वीकार्य है, तथा येन-केन प्रकारेण संसार को इस विचारधारा का अनुयायी बनाना पवित्र कर्तव्य है। इस अहंकार से ग्रस्त होकर जब आप अन्यों से व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं तो वह समाज के योगक्षेम का कारक कदापि नहीं बन सकता। यही मनःस्थिति आज के विश्व का अभिशाप है।

अपने को सहिष्णु तथा दूसरों को असहिष्णु बताने का कोई लाभ नहीं जब इतिहास आपके साथ नहीं है। रक्त से रंजित इतिहास भविष्य को क्या सन्देश देगा? सत्ता और तलवार के बल पर आप किसी को एक समय तक दबा सकते हैं पर अन्याय सदा-सदा के लिए स्थापित नहीं हो सकता। विश्व भर में हुयी क्रांतियाँ इसकी गवाह हैं। विडम्बना यह है कि ऐसे व्यवहार का जब विरोध होता है तब आपको आश्चर्य होता है कि ये लोग सर कैसे उठाने लगे? तब अपने अहंकार में चूर हो आप उसे आपके द्वारा किये गए व्यवहार की स्वाभाविक प्रतिक्रिया न मानते हुए उस समाज को, वर्ग को असहिष्णु का टेग दे देते हो। आप आत्मावलोकन नहीं करते।

कुछ ऐसा ही आज भारत में ही नहीं विश्वभर में हो रहा है। **श्रेष्ठता के दंभ से आतंकवाद उपज रहा है। विश्व को स्वर्गसम बनाने की शिक्षा के बजाय मृत्योपरांत स्वर्ग के सब्जबाग दिखाए जा रहे हैं। जन्नत तो पता नहीं कैसी होगी, परन्तु इसके अभिलाषियों ने वर्त्तमान को दोजख बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।** सामान्य नैतिकता है कि कोई आप पर उपकार करे तो आपको कृतज्ञ होना ही चाहिए। जब आपके सर पर छाँव नहीं थी, भूख की बजह से पेट पीठ से चिपक रहा था, गला प्यास से सूख रहा था ऐसे में कोई आपके लिए अपने दरवाजे खोले और आपके जीवन की रक्षा करे तो उसके साथ आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए? स्वाभाविक उत्तर है कि 'स्वस्य प्रियमात्मनः' के सूत्र का अनुसरण करिए। अगर आप किसी को इस दशा में शरण देते तो क्या यह नहीं चाहते कि वह आपका धन्यवादी रहे? किताबी बातें और हैं आप ही क्या, हर व्यक्ति ऐसे शरणार्थियों से कृतज्ञतापूर्ण व्यवहार की अपेक्षा करता।

स्मरण रखना चाहिए जो आज मुस्लिम भ्रातृत्व की दुहाई दे रहे हैं,जब मुस्लिम शरणार्थियों के सामने जान का संकट था, लाखों मुसलमान अपना देश छोड़ने को मजबूर थे तब इन्हीं मुस्लिम देशों ने अपने ही मुस्लिम भाई-बहनों को शरण देने से इंकार कर दिया। अपने-अपने बार्डर पर सेनाओं की तैनाती कर दी ताकि ये मुस्लिम शरणार्थी उनके देश में न घुस पाएं। परन्तु तब यूरोप के देशों ने अपने दरवाजे खोल दिए। आप पोलेंड की आलोचना कर सकते हैं कि उन्होंने अपने दरवाजे नहीं खोले पर आज पोलेंड में ही शान्ति है, पोलेंड के अतिरिक्त यूरोप के सभी देश इस दंश को झेल रहे हैं। क्या यह योरोप वासियों को यह सोचने पर मजबूर नहीं कर रहा कि उदारता का प्रदर्शन उनकी भयंकर भूल थी? और क्या इस प्रत्यक्ष इतिहास से सबक ले भविष्य में ऐसे मुसीबतजदा लोगों के लिए सभी राष्ट्र अपने दरवाजे बंद नहीं कर लेंगे?

विचारशील इस समस्या पर चिंतन अवश्य कर रहे हैं और उनके निष्कर्ष अनेकों को संतुष्ट नहीं भी कर सकते हैं परन्तु उनका कथन है कि गंभीरता से विचारेंगे तो वास्तविकता सबको नजर आयेगी। आंख बंद कर लेने मात्र से इस संकट से छुटकारा नहीं पाया जा सकता। यह सोचने वाली बात है कि पिछले एक दशक से यूरोपीय देशों को बार-बार आतंकी हमलों का सामना क्यों करना पड़ रहा है? जिन देशों में जिस संख्या में शरणार्थी अल्पसंख्यकों की आबादी बढ़ती है उन देशों में उसी अनुपात में कानून व्यवस्था और शांति को खतरा क्यों और कैसे पैदा हो जाता है? स्पेन की राजधानी मैड्रिड, बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स समेत शायद ही यूरोप का कोई ऐसा देश अब बचा हो जिसने इन शरणार्थियों को अपने यहां शरण दी हो और वहां शांति हो।

क्रमशः

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

न्यास के जन सम्पर्क सचिव व उदयपुर आर्यजगत् के सुपरिचित सदस्य श्री विनोद कुमार राठौड़ की सुपुत्री सुश्री सृष्टि राठौड़ का चयन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रान्त सहमंत्री पद पर हुआ है इस सुअवसर पर बिटिया को सामाजिक क्षेत्र में नित-नूतन ऊंचाइयों को स्पर्श करने के शुभाशीष सहित राठौड़ परिवार को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं-

- भवानी दास आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

१०

(फरवरी 2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

शुद्ध चैतन्य जी को ब्रह्मचर्याश्रम में अपने हाथ से ही भोजन बनाना पड़ता था जिससे उनके विद्याध्ययन में बाधा पड़ती थी। सांसारिक वासनाओं से तो वे पहले ही विमुक्त हो चुके थे अतः उन्होंने संन्यासाश्रम में प्रविष्ट होने का निश्चय किया। उनकी इच्छा, शास्त्र निष्णात, योग विद्या के पारगामी विद्वान् चिदाश्रम स्वामी से संन्यास दीक्षा लेने की थी, किन्तु उन्होंने ब्रह्मचारी जी को अल्पवयस कहकर दीक्षा देना अस्वीकार कर दिया।

दो मास पश्चात् ही उन्हें ज्ञात हुआ की चाणोद के निकटवर्ती वन में वेदान्त व शास्त्रों के अगाध पण्डित, एक दाक्षिणात्य संन्यासी – ''दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती'' ठहरे हुए हैं। शुद्ध चैतन्य जी अपने परिचित एक दाक्षिणात्य वेदान्ती विद्वान् के साथ स्वामी पूर्णानन्द जी की सेवा में पहुंचे व अपने मित्र से, स्वामी जी द्वारा संन्यास दीक्षा दिलवाने हेतु उनसे अनुरोध करने का आग्रह किया।

मित्र की अनुशंसा पर प्रथम तो स्वामी पूर्णानन्द जी ने दीक्षार्थी के अल्पवयस होने व शुद्ध चैतन्य जी के महाराष्ट्री न होकर गुजराती होने के कारण दीक्षा देना अस्वीकार कर दिया। पुनः मित्र द्वारा समाधान प्रस्तुत किये जाने पर, संतुष्ट होकर, ब्रह्मचारी जी को विधिवत् संन्यास दीक्षा प्रदान की एवं नवदीक्षित शिष्य को दयानन्द सरस्वती का नाम दिया।

श्वसुरे साम्राज्ञी भव

नारी हित की रक्षा करने, ऋषि दयानन्द आए थे।

नारी जीवन के सम्मान और स्वायत्तता की बात करें तो उसकी वास्तविकता गृहस्थ जीवन में ज्ञात होती है, ऐसा माना जाय तो अनुचित न होगा। नारी को सम्मान अथवा उस पर अत्याचार व उसकी अप्रतिष्ठा प्रायः वैवाहिक जीवन में ही देखने को मिलती है। उसके जीवन का सबसे लंबा काल श्वसुर गृह में ही व्यतीत होता है। यहीं उसे मातृत्व का गौरवशाली पद प्राप्त होता है। वैदिक संस्कृति में तो पत्नी को श्वसुर गृह की साम्राज्ञी माना गया है। वह केवल पति की महारानी नहीं बल्कि सास, श्वसुर, ननद, देवर सभी की सम्राज्ञी कही गयी है। वह अभी दूसरे घर से आयी है, पर नवीन घर अर्थात् ससुराल में उसे सर्वोच्च स्थान दिया गया है। आश्चर्य उस सोच पर होता है जहां स्पष्ट कहा गया है कि नारी जन्नत की अधिकारिणी नहीं होती। अरे! वह तो जन्नत की निर्मात्री है, वह न हो तो घर श्मशान है वह है तो घर स्वर्ग है।

ऋग्वेद का निम्न मन्त्र देखें-

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवाभव,
ननान्दरिसम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देवृषु -(ऋग्वेद १०.८५.४६)

हम पूर्व आलेख में दिखा चुके हैं कि संसार की 'किताब वाली' संस्कृति में स्त्री को दोयम माना गया है। उन्हीं के शासन काल में, संपर्क-दोष से भारत में भी यह मिथ्या व अशोभनीय परिपाटी चल पड़ी थी। **महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र ही नर और नारी को एक समान माना है। पति को पृथक् से कोई अतिरिक्त अधिकार नहीं हैं।** इसी से पूना प्रवचन में महर्षि दयानन्द ने कहा कि 'यदि विधुर पुरुष पुनर्विवाह करते हैं तो विधवाओं का विरोध करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है।'

अपने द्वारा लिखित एक सरल पुस्तक व्यवहारभानु में भी वह इस बराबरी के अधिकार को देने से नहीं चूकते। देखें -

प्रश्न-प्रमादी ब्रूते (पागल मनुष्य कहता है) कि 'सुनो जी! कन्या का पढ़ना शास्त्रोक्त नहीं क्योंकि जब वह पढ़ जावेगी तो मूर्ख पति का अपमान कर, इधर-उधर पत्र भेजकर अन्य पुरुषों से प्रीति जमा के व्यभिचार किया करेगी।' अर्थात् प्रश्नकर्ता स्त्री-शिक्षा का इसलिए विरोध कर रहा है कि पढ़कर वह चरित्रभ्रष्ट हो जायेगी। तब महर्षि दयानन्द उत्तर देते हैं कि यही बात पुरुष के साथ भी हो सकती है। वह भी पढ़कर चरित्रभ्रष्ट हो सकता है अतः उसके पढ़ने का भी निषेध होना चाहिए। देखें-

उत्तर-(सज्जनः समाधत्ते) श्रेष्ठ मनुष्य उसको उत्तर देता है 'सुनो जी! तुम्हारे कहने से यह आया कि किसी पुरुष को भी न पढ़ना चाहिये क्योंकि वह भी पढ़कर मूर्ख स्त्री का अपमान और डाकगाड़ी चलाकर इधर उधर अन्य स्त्रियों के साथ सैल सपाटा किया करेगा।'

यह बराबरी सदैव भारतीय समाज का अंग संग रही है। समानता का प्रथम आधार शिक्षा है। जहां कहीं भी स्त्री शिक्षा का अधिकार बाधित होगा वहां स्त्री-पुरुष की समानता का दावा आभासी ही होगा। अतः महर्षि दयानन्द सर्वत्र मुखर होकर स्त्री को शिक्षा के क्षेत्र में समानता का अधिकार देते हैं। यह हम पूर्व की कड़ियों में भी लिख आये हैं यहाँ बस ऋषि का

एक महत्त्वपूर्ण तर्क और देना चाहेंगे।

यजुर्वेद ८.९ का भाष्य करते हुए महर्षि माता के शिक्षित होने को अनिवार्य मानते हैं। वे इस मन्त्र के भाष्य में लिखते हैं-' जिनके माता-पिता विद्वान् न हों, उनके संतान भी उत्तम नहीं हो सकते, इसलिए पूर्ण विद्या और सुशिक्षा से युक्त होके ही स्त्री-पुरुष गृहाश्रम का आरम्भ करें।' **इस मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन, इस अद्भुत दृष्टिकोण का निरूपण वेद के अतिरिक्त किसी मत-मतान्तर की पुस्तकों में किया हो तो बतावें।**

यहाँ हम यह भी निवेदन कर दें कि जो लोग शिक्षा का अर्जन कर नौकरी कर वेतन अर्जित करने को स्त्री का सशक्तीकरण मानते हुए उनके पढ़ने की वकालत करते हैं उनका चिंतन एकांगी है। वेतन अर्जित करना तो शिक्षिता की बहुत लघु उपलब्धि है, घर को घर बनाना, सबको धर्मपथ पर आरूढ़ रखना और संतति में मानवीय मूल्यों की स्थापना वह बहुमूल्य उपलब्धियां हैं जिनसे परिवार में और प्रकारांतर से समाज में सर्व सामंजस्य और सुख स्थापित होता है। केवल अर्थ प्रधान सोच के कारण इस पक्ष को सर्वथा विस्मृत करना आज के नानाविध क्लेशों के मूल में है। अगर नौकरी और व्यवसाय की बात करें तो महर्षि दयानन्द किसी भी क्षेत्र को बाधित नहीं करते यहाँ तक कि सैनिक और न्यायाधीश के रूप में स्त्री की भूमिका के वे समर्थक हैं, परन्तु गृह की धुरी विदुषी धार्मिकी नारी हो, उच्चतम उद्देश्य से वे इसके अभिलाषी हैं।

अब हम बात करते हैं उन स्थितियों की जो नारी के स्वाभाविक विकास में, और प्रकारांतर से राष्ट्र के विकास में बाधक हैं।

अशिक्षा

बाल विवाह

बेमेल विवाह

अप्रसन्नता व असहमति का विवाह

पर्दाप्रथा

बहुपत्नी प्रथा

विवाह विच्छेद

वेद में परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ के साथ ही मनुष्य को चेतावनी दे दी थी कि यदि वह सर्वप्रकार के सुख का अभिलाषी है तो उक्त स्थितियों को किसी भी परिस्थिति में समाज में पनपने न दे। ऐसे निर्देश देने वाले अनेकों वेदमंत्र हमें मिलते हैं।

स्त्री शिक्षा के विषय में इन कड़ियों में पूर्व में काफी कुछ लिखा जा चुका है।

दूसरा प्रमुख अवरोध बाल विवाह है जो अनेक प्रकार से नारी के विकास व सम्मान के लिए ही नकारात्मक नहीं वरन् उसके स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए हानिकारक है।

भारतवर्ष में बाल विवाह का चलन विदेशी आक्रान्ताओं के आने से पूर्व था, ऐसे प्रमाण नहीं मिलते। भारत में स्वयंवर विवाह की प्रथा थी। यह तभी संभव था जब कन्या उस आयु और योग्यता को धारण करती हो जिसके कारण वह अपने लिए अनुकूल पति का चयन कर सके। कन्या को स्वयंवर का अधिकार ही बाल विवाह का निषेध कर देता है। वस्तुतः ये सारी कुरीतियाँ एक दूसरे से जुड़ी हैं। एक से दूसरी का निवारण होता है। अतः नारी सम्मान एव सशक्तीकरण और कहा जाय तो सम्पूर्ण समाज के उन्नयन के लिए इन सभी का एक साथ उच्छेद करना होगा। यहाँ हम एक वेदमंत्र उद्धृत कर रहे हैं जिसमें यही निर्देश दिया गया है।

दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः।
सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः॥

ऋ.५.४२.१२

कन्या और वर जब ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्या पूर्ण करलें, पूरी युवावस्था प्राप्त हो जाय और परस्पर की परीक्षा भी हो जावे, तब स्वयंवर विवाह विधि से पति-पत्नी होकर सौभाग्यशाली होवें। (महर्षि दयानन्द भाष्य)

पाठक स्वयं देख सकते हैं कि इस वेद मन्त्र में पूर्ण शिक्षा की बात सर्वप्रथम करते हुए निर्देशित किया है कि विवाह तभी हो जब वे युवावस्था को प्राप्त करलें। तत्पश्चात् कन्या तथा वर जो कि तुल्य गुण-कर्म-स्वभाव रखते हों वे आपस में भली भाँति जानलें, उन दोनों की स्वीकृति होने से उनका विवाह स्वयंवर कहलाता है जो कि सर्वश्रेष्ठ है। जब ऐसा हो तब गृहस्थ में सौभाग्य का निवास होता है।

बालविवाह - महर्षि दयान्द बाल विवाह को दुःख का मुख्य कारण मानने में भी संकोच नहीं करते वे लिखते हैं कि-

जिस देश में ब्रह्मचर्य, विद्याग्रहणरहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दुःख में डूब जाता है। क्योंकि ब्रह्मचर्य्य विद्या के ग्रहणपूर्वक विवाह के सुधार ही से

सब बातों का सुधार और बिगड़ने से बिगाड़ हो जाता है।
(सत्यार्थ प्रकाश)

यह बात सही भी है। रोग का सही निदान ऋषि दयानन्द ने कर लिया था। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा ग्रहण करने हेतु मथुरा में ढाई वर्ष से कुछ अधिक समय बिताया था। वहां ऐसे समुदाय हैं जिनमें गर्भावस्था में ही वाग्दान हो जाता था कि यदि एक के लड़की और दूसरे के लड़का हुआ तो वे समधी बन जायेंगे अर्थात् उन बच्चों का आपस में विवाह हो जाएगा। कौन भविष्य में कैसा होगा? उनके रूप, बल, योग्यता की तुल्यता का क्या होगा? जो कि गृहस्थ की सफलता का मूलाधार है,यह प्रश्न के घेरे में ही रहता था। यह वह समय था जब यह धारणा प्रतिष्ठित कर दी गयी थी कि अगर बालिका पढ़ लेगी तो गृहस्थ का सर्वनाश हो जाएगा। ऐसी परिस्थिति पर महर्षि दयानन्द का ध्यान निश्चित पहुंचा होगा। ऋषि की दृढ़ मान्यता थी कि जब तक माता धार्मिकी विदुषी न होगी तब तक संतानों के श्रेष्ठ होने में संशय ही रहेगा। अतः बाल विवाह के विरुद्ध महर्षि दयानन्द ने और पश्चात् में आर्यसमाज ने कमर कस ली।

महर्षि दयानन्द अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये विना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते हैं, वे स्त्री-पुरुष नष्ट-भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।'

वस्तुतः देखा जाय तो बाल विवाह से स्त्रियों की दुर्दशा अधिक हो रही थी इसलिए महर्षि दयानन्द ने बहुत स्पष्ट लिखा कि - 'बाल्यावस्था में विवाह से जितना पुरुष का नाश उससे अधिक स्त्री का नाश होता है।' (सत्यार्थ प्रकाश)

यह बात सही है। प्रथम तो अपवादस्वरूप कुछ प्रकरणों को छोड़ दें तो विवाह के पश्चात् उस बालिका को पढ़ने का अवसर नहीं मिल पाता यह सबसे बड़ा अन्याय है जो उसके स्वाभाविक विकास को अवरुद्ध कर देता है। लड़के के ऊपर भी गृहस्थी का बोझ शीघ्र आ जाने के कारण यही उसकी भी स्थिति होती है। अल्पावस्था में विवाह करने के पश्चात् जब पति पत्नी सम्बन्ध बनाते हैं तो गर्भधारण कन्या को ही करना पड़ता है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में १५-१६ वर्ष की महिलाओं में २७ प्रतिशत या तो मां बन चुकी थीं या पहली बार गर्भवती थीं। इनमें सर्वाधिक भयावह स्थिति झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल व बिहार की है जहाँ क्रमश २७.५, २५ व २५ प्रतिशत महिलायें १५-१६ वर्ष के मध्य माँ बन चुकी थीं या बनने जा रही थीं।

किसी लेखक ने सही लिखा कि 'जिस उम्र में लड़कों के दांत टूटते हैं उस उम्र में लड़कियों के ख्बाब टूट चुके होते हैं, वे पत्नी, बहू और माँ बनने की कतार में होती हैं।'

जिस प्रकार कच्ची मटकी में पानी भरे जाने से मटकी भी फूट जाती है और पानी भी बह जाता है वही स्थिति बाल-माता की होती है। इसी के साथ गर्भपात, कम वजन के बच्चे का जन्म, बच्चों में कुपोषण, माता में कुपोषण, खून की कमी होना, मातृ-मृत्यु, माता में प्रजनन मार्ग संक्रमण,यौन संचरित बीमारियां एचआईवी संक्रमण की संभावना में वृद्धि होने की पूर्ण संभावना रहती है। अध्ययनों से यह सिद्ध हो चुका है कि १५ वर्ष की उम्र में माँ बनने से मातृ-मृत्यु की संभावना २० वर्ष की उम्र में माँ बनने से पांच गुना अधिक होती है।

पूना के अपने तीसरे प्रवचन में महर्षि दयानन्द कहते हैं- 'यदि इस समय में हम लोगों में बाल-विवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात तथा भ्रूण हत्याएं होतीं और न इतने रोगों की अधिकता होती।' इस कथन में निहित करुणा का स्वर सुधी पाठकों को स्पर्श किये बिना नहीं रह सकता।

भारतीय संस्कृति में विवाह का प्रमुख उद्देश्य स्वस्थ व चरित्रवान संतान का निर्माण है। महर्षि धनवन्तरि ने कहा था कि बाल-विवाहित पति-पत्नी स्वस्थ एवं दीर्घायु सन्तान को जन्म नहीं दे पाते, ऐसी स्थिति में नैतिक मूल्यों की स्थापना का तो कहना ही क्या। अतः बाल विवाह का दुष्परिणाम व्यक्ति, परिवार को ही नहीं बल्कि समाज और देश को भी भोगना पड़ता है। जनसंख्या में वृद्धि होती है जिससे विकास कार्यों में बाधा पड़ती है।

इसीलिए महर्षि दयानन्द राष्ट्र के विकास में सबसे बड़ी बाधा 'बाल्यावस्था में विवाह अर्थात् पच्चीस वर्षों से पूर्व पुरुष और सोलहवें वर्ष से पूर्व स्त्री का विवाह हो जाना, पूर्ण ब्रह्मचर्य्य न होना, मानते हैं।

वे आगे लिखते हैं -स्त्री वा पुरुष अच्छे प्रकार निश्चय करके ब्रह्मचर्य से विद्या, शिक्षा, शरीर और आत्मा के बल और युवावस्था को प्राप्त हो ही के विवाह करें। इससे विरुद्ध करना वेद विरुद्ध होने से सुखदायक विवाह कभी नहीं होता। क्रमशः

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

गुरु विरजानन्द दण्डी की कुटिया में आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान की प्राप्ति की समाप्ति के उपरांत गुरु दक्षिणा देते समय गुरु विरजानन्द दण्डी ने दीक्षा में स्वामी दयानन्द से मांगा कि मुझे दक्षिणा में और कुछ नहीं चाहिए, तुम मुझे यह वचन दो कि तुम अपना जीवन आर्ष विद्या के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित करोगे, तुम धर्म के नाम पर अन्धविश्वास में ग्रस्त मानव जाति को धर्म के सच्चे स्वरूप को उजागर करने वाले वैदिक धर्म का अभियान चलाओगे। समाज में व्याप्त भयंकर कुरीतियां, आर्थिक शोषण, सामाजिक विषमता, शिक्षा के अभाव में अज्ञान का भयंकर अन्धकार राजनीतिक दासता और अनेक प्रकार से मानव का दुरुपयोग करने वाले स्वार्थी लोगों के वर्ग विशेषों का जाल इत्यादि अनेक प्रकार से मानव जाति को अपना शिकार बनाकर अपने आपको ही पोषित रखने के लिए सर्वोपरि रखने के कुचक्रों के विरोध में उन सबसे मानव जाति को मुक्ति दिलाने के लिए एक क्रान्तिकारी अभियान की आँधी का तूफान विश्वभर में लाओगे जो विश्व में व्याप्त इन सब व्याधियों को झकझोर डालेगा। अपने जीवन की इसी महान् अश्वमेध यज्ञ में आहुति डालकर जीवन को स्वाहा करने का वचन देकर, स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द दण्डी जी से विदाई ली और कार्य क्षेत्र में और कर्मक्षेत्र में छलांग लगा दी। ज्यों ज्यों आगे चलते गए नये-नये अनुभवों से नए-नए विचारों द्वारा कार्य प्रणाली में सुधार आता गया। दुनिया के जीवन की वास्तविकताएं नंगी होकर सामने आकर खड़ी होती गईं। इन सब अनुभवों के द्वारा स्वामी दयानन्द ने विश्व के मानस मंडल के सभी क्षेत्रों के रोगों की नब्ज पकड़ ली, असली रोग की गहराइयां समझ में आ गईं और अपनी योग साधना और कठोर तपस्या करके स्वामी दयानन्द ने उन सभी व्याधियों का निदान खोज डाला और समाज के प्रत्येक रोग की जड़ तक पहुंच कर तीक्ष्ण शल्य चिकित्सा की, समाज के नस-नस में छुपे हुए कीटाणु और विषाणुओं को ढूढ़कर निकाल फेंका। जिस सच्चे शिव की खोज करने के लिए भरी जवानी में अपना गृह त्याग किया था और जिसकी खोज में उन्होंने अपने समूचे जीवन को लगाया था उसकी भी प्राप्ति उनको हो गई और **इन सबका निचोड़ सार्वरूप में उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिख डाला जो उनके अनुयायियों का एकमात्र ऐसा प्रमाणिक मागदर्शक बन गया, जैसे ईसाईयों के चर्च का बाइबिल और इस्लाम का कुरान शरीफ।**

अपने मिशन का सत्यार्थ प्रकाश द्वारा और उपदेशों द्वारा धर्म का प्रचार करने के लिए तथा अपने अनुयायियों को एकसूत्र में अटूट रूप से जोड़कर बांधे रखने के लिए संस्था के रूप में दृढ़ संगठन 'आर्य समाज' के नाम से स्थापित करने से स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायियों को एक ऐसा अपना निजीमंच भी मिल गया जो उनके सभी प्रकार के कार्यक्रमों को, अदम्य आवाज को, विश्वभर में गुँजाने का अचूक प्रहार करने का अस्त्र समान साधन सिद्ध हुआ। अब स्वामी दयानन्द को अपने क्रान्तिकारी अभियान की गूंज सुनाने के लिए स्वच्छन्द निर्बाध आकाश में ऊंची से ऊंची उडान भरने में कोई उनका सामना करने वाला नहीं रहा, जो भी सामने आया पछाड़ खाकर चारों खाने चित्त गिरा।

केवल मात्र ईश्वर के आनन्द में विचरण करने वाला, दुनियादारी के सब झंझटों से ऊपर उठकर मुक्त दशा को प्राप्त, हिमालय की चट्टान सा खड़ा हुआ निर्भीक दयानन्द, किसी के सामने न झुकने वाला और सबसे लोहा लेने वाला अदम्य दयानन्द एक भयंकर अग्नि की ज्वाला की चिन्गारियां भड़काता हुआ चल रहा था। अविद्या अन्धकार में डूबे अन्धविश्वासी, पाखण्डी, दीन हीन भोली जनता को अपने दास-पाश में बांधकर रखने वाले असामाजिक तत्व एक एक करके पलायन कर रहे थे। दयानन्द की विजय पताकाएं फहराने लगीं और उनके मिशन के स्तम्भ स्थान-स्थान पर गढ़ने लगे। यह होते होते सन् १८७०-७८ का

समय आ गया। स्वामी दयानन्द अप्रैल १८६३ में गुरु विरजानन्द जी दण्डी से दीक्षा लेकर निकले थे। सन् १८७४ में सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हो गया और १८७५ में आर्य समाज की स्थापना हो गई। तदन्तर स्वामी दयानन्द के प्रमुख दो और कार्यों का लेखा जोखा उल्लेखनीय है जो उनके जीवन के ऐतिहासिक स्तम्भ और मील के पत्थर बने। यद्यपि १८७५ में आर्य समाज की स्थापना के बाद वे अनेक ग्रन्थों यथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदों के भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों की रचनाओं और धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि अनेक क्रान्तिकारी आन्दोलनों के कार्यक्रमों में दिन रात व्यस्त रहे। ऋषि दयानन्द देश के भिन्न स्थानों पर वेदोपदेश करते हुए घूम घूमकर वैदिक धर्म की धूम मचा रहे थे। तब सन् १८७७ में एक विशेष घटना हुई।

घटना १८७७ के किसी मास की है। एक स्थान पर व्याख्यान देते हुए ऋषि दयानन्द मृतकश्राद्ध का खण्डन कर रहे थे। तभी एक ब्राह्मण हाथ में सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण) लिए हुए जोर जोर से शोर मचाकर कहने लगा यहां यह व्याख्यान में क्या कह रहा है और अपने ग्रन्थों में क्या लिखता है ? यह कितनी अंधेरगर्दी है इत्यादि। व्याख्यान में बैठे हुए श्रोता श्रद्धालु लोग उसके शोर को शांत करने के लिए उसे पकड़कर जबरदस्ती बिठाने लगे तो स्वामी दयानन्द ने तभी उसे अपने पास बुलाया। सत्यार्थ प्रकाश के उस प्रकरण को खोलकर देखा तो देखकर दंग रह गए क्योंकि पुस्तक में तो सचमुच वही लिखा था जो वह कह रहा था। सत्य को बिना संकोच के ग्रहण करके स्वीकार करने वाले ऋषि दयानन्द ने उससे कहा 'महाशय तुम ठीक कहते हो, लेखकों ने मेरे आशय के विरुद्ध लिखकर छपवा लिया है।'

इस घटना ने ऋषि दयानन्द की आंखें खोल दीं। वस्तुतः ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश को स्वयं जुबानी बोल बोलकर दूसरों से लिखवाया था, स्वयं नहीं लिखा था। लिखवाने के बाद पाण्डुलिपि को न स्वयं देखकर पढ़ा था, न पुस्तक के प्रूफ ही स्वयं देखे थे। यहां तक कि पुस्तक छप जाने के बाद अनेक वर्षों तक न स्वयं पढ़कर पुस्तक देखी थी कि इसमें क्या लिखकर छपा हुआ है, क्योंकि अपने कार्यक्रमों में व्यस्तता के कारण न तो उनके पास समय था और न ही उनको कभी यह विचार भी आया था कि लेखक उनके साथ इतना विश्वासघात करेंगे। वास्तविकता यह थी कि पुस्तक की पाण्डुलिपि लिखने वाले, प्रूफ रीडिंग करने वाले और पुस्तक को छपवाने वाले वही लोग थे और वे उसी वर्ग से संबंध रखते थे जिनकी रोजी रोटी मृतक श्राद्धों के कारण से चलती थी और मृतक श्राद्ध का खण्डन करने और पुस्तक में उसे छापने से जिनकी वह रोजी रोटी छिनती थी और ऋषि दयानन्द इतने सरल हृदय थे कि कभी उनके प्रति कोई शंका नहीं हुई। ऋषि ने यह सब अनर्थ छपा हुआ देखकर सत्यार्थ प्रकाश का आद्योपान्त संशोधन करके दूसरा नया संस्करण निकालने की ठान ली और तभी उसी स्थान से विज्ञापन लिखकर भेज दिया कि सत्यार्थ प्रकाश के अमुक पृष्ठों की अमुक पंक्तियों में जो मृतक पितर आदि के तर्पण एवं श्राद्ध करने के विषय में छपा है वह लिखने और शोधने वालों की भूल से छप गया है। किन्तु यज्ञों में पशु हिंसा का विधान एवं मांस भक्षण का विषय ऋषि दयानन्द के सामने चिरकाल तक नहीं आया और उस ओर उनका ध्यान सत्यार्थ प्रकाश की द्वितीय आवृत्ति तैयार करते समय गया।

अभी तक स्वामी दयानन्द जी महाराज का जीवन वेदोपदेश और प्रचार कार्यों के लिए समूचा देशाटन करने, शास्त्रार्थ करने, पुस्तक लिखने अपने अनुयायियों को संगठित करने हेतु आर्य समाजों की स्थापना करने आदि कार्यों की व्यस्तताओं में बीता।

स्वामी जी को संभवतः यह भी आभास हो गया था कि उनके भौतिक नश्वर शरीर का अन्त कभी भी हो सकता है। अतः वे अपने सभी कार्यों की गतिविधियों को एक ऐसे दृढ़ आधार स्तम्भ स्थान पर केन्द्रित करना चाहते थे जो पूरी तरह उनके उपयुक्त और योग्यतम हो। **इसके लिए उनकी नजर टिकी सभी राजाओं के राजाधिराज, देश के इतिहास प्रसिद्ध वीर शिरोमणि आर्य जाति के परम रक्षक मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह के वंशज, अपने परम दिवाकर नवयुवक शिष्य, उनकी सभी आशाओं और कार्यक्रमों को पार लगाने की शक्ति रखने वाले वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी राजपूताना की मेवाड़ भूमि के नरेश महाराणा**

सज्जन सिंह पर। अतः महर्षि दयानन्द की आगामी गतिविधियों का गढ़ बना 'महाराणा का उदयपुर' जहां पर उन्होंने आर्य समाज की स्थापना के बाद दो और मील के पत्थरों के स्तम्भ गाढ़े।

उनमें पहला मील का पत्थर था सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन कार्य और उसका प्रकाशन का कार्य। जैसाकि हम पहले लिख चुके हैं कि ऋषि दयानन्द को यह पता चला कि उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को धूर्त पौराणिक पंडित लेखकों ने उनके आशय के विरुद्ध मृतक पितृकादि के श्राद्ध तर्पण की बात और यज्ञों में पशु हिंसा तथा मांस भक्षण आदि का विधान लिखकर छपवा दिया है तो ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन करने की ठान ली और इसके लिए उन्होंने स्थान चुना महाराणा का उदयपुर। यहां उल्लेखनीय है कि ऋषि के यजुर्वेद के भाष्य में भी पौराणिक धूर्त लेखकों ने मांस भक्षण का विधान लिख दिया था जिसको ऋषि के कहने पर मुंशी समर्थदान ने निकाला और शुद्ध छपवाया। महाराणा सज्जन सिंह, जो ऋषि के परमभक्त और सच्चे निष्ठावान वेदानुयायी मेवाड़ के राजाधिराज थे, ने ऋषि दयानन्द से अनुरोध किया कि वे उदयपुर पधारकर अपने महान् कार्यों को प्रगति प्रदान करें। ऋषि दयानन्द ने महाराणा सज्जन सिंह जी के अनुरोध को स्वीकार किया और वे ११ अगस्त १८८२ ईस्वी को उदयपुर पहुंचे। महाराणा सज्जनसिंह जी ने उदयपुर में नवलखा महल बाग में स्थित अपने सज्जननिवास के घर को ऋषि के लिए खोल दिया। उन्हें वहां ठहराया, उनके भोजनादि तथा अन्य सुख सुविधाओं का प्रबन्ध महाराणा जी ने किया। **महाराणा के इसी भवन को आजकल नवलखा महल कहते हैं।** ऋषि दयानन्द गुलाब बाग, उदयपुर में श्रावण शुक्ला १० से लेकर फाल्गुन कृष्णा ७ विक्रम संवत १९३९ तद्नुसार ११ अगस्त सन् १८८२ से २७ फरवरी १८८३ ईस्वी तक लगभग साढ़े छह माह महाराणा के नवलखा महल में रहे। इतने पूरे समय तक प्रतिदिन निरन्तर महाराणा सज्जन सिंह जी अपने गुरु ऋषि दयानन्द जी की श्री सेवा में उपस्थित होने और उनसे व्याकरण, दर्शनशास्त्र तथा राजनीति आदि का गंभीर अध्ययन और विचार विमर्श करते थे। ऋषि दयानन्द ने इतने समय तक इसी नवलखा महल उदयपुर में रहकर सत्यार्थ प्रकाश का संशोधन किया और सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका यहीं रहते हुए लिखी। अतः संशोधित सत्यार्थ प्रकाश(द्वितीय संस्करण) की भूमिका के अन्त में इसके संशोधन और लेखन का स्थान लिखा(महाराणा का उदयपुर)।

सत्यार्थ प्रकाश ऋषि दयानन्द का अद्भुत क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ विश्व में धार्मिक अन्धविश्वासों को जड़ से उखाड़ने के उद्देश्य से तीव्र प्रहार करने के साथ साथ सामाजिक कुरीतियां, आर्थिक विषमताएं, शैक्षणिक विकृत परम्पराएं, राष्ट्रिय दासता और राजनीतिक समस्याओं आदि का समाधान प्रस्तुत करके आध्यात्मिक तथा स्वस्थ जीवन पद्धति, सुखी और समृद्ध समाज

आर्यजगत्' के मूर्धन्य विद्वान्, वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक से कौन प्रबुद्ध आर्य परिचित नहीं है। जीवन के अन्तिम वर्षों में महाराणा सज्जनसिंह जी से विशेष अपेक्षा रखते हुए महर्षि जी ने अपने उदयपुर प्रवास में दो अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य किए थे। प्रथम सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन और द्वितीय अपनी उत्तराधिकारिणी सभा-परोपकारिणी सभा की स्थापना। अपनी सुलेखनी से, प्रस्तुत लेख में आपने उक्त कार्यों के महत्व को निरूपित किया है। पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। सम्पादक

तथा संस्कारित विश्व मानव जाति के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

ब्रिटिश साम्राज्य के तत्कालीन गुप्तचर राज्य कर्मचारियों ने सत्यार्थ प्रकाश को (आर्य समाज का बाइबिल-बाइबिल ऑफ द आर्य समाज) की उपाधि दी थी। सत्यार्थ प्रकाश का आर्य समाज में वही स्थान है जो ईसाई चर्च में इंजील(बाइबिल) का, मोहम्मदी में कुरानशरीफ तथा खालसा पंथ में ग्रन्थ साहब का है। आचार्य दयानन्द ने अपने अनुयायियों के आधार संगठन केवल आर्य समाज के लिए ही इस ग्रन्थ की रचना नहीं की अपितु विश्व मानव समाज के लिए यह सत्य के प्रकाश द्वारा मार्गदर्शक ग्रन्थ है। सत्यार्थ प्रकाश आर्य जगत् की आचार संहिता का ग्रन्थ बन गया किन्तु फिर भी वेद का स्थान ऋषि दयानन्द ने सर्वोपरि स्वतः प्रमाण के रूप में रखा। सत्यार्थ प्रकाश परतः प्रमाण होने के कारण उतना ही मान्य है जितना वेद के अनुकूल होगा अन्यथा नहीं। यह है ऋषि दयानन्द की विश्व में कोई नया मत या सम्प्रदाय चलाने, खड़ा न करने की घोषणा का ज्वलन्त प्रमाण।

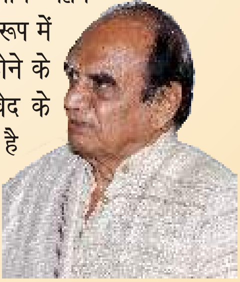

क्रमशः

- वेद मार्तण्ड
डॉ.महावीर मीमांसक
उ-3/11, पश्चिम विहार, दिल्ली

मनुष्य का स्वभाव है, सदा से रहा है, किसी भी तथ्य के किसी भी पक्ष के प्रति सहजता से, सरलता से प्रभावित हो जाना, उसका अनुगामी हो जाना या उसका पालन करने लग जाना। विशेषरूप से तब, जब वह तथ्य या विचार उसके मनोनुकूल हो, मनभावन हो या उसकी चित्तवृत्तियाँ उससे संतुष्ट होती हों। और इस प्रक्रिया में अधिकतर, परमपिता द्वारा प्रदत्त बुद्धि, ज्ञान और विशेषरूप से विवेक का या तो स्वयं ह्रास हो जाता है या बलात् कर दिया जाता है। विवेक या अन्तरात्मा का स्वर, वो शक्ति है जो अनायास हमें सही गलत का परिचय करा जाता है भले ही विद्या, ज्ञान या बुद्धि हमें अन्यत्र प्रेरित कर रहे हों। हालांकि तात्पर्य यह भी नहीं है कि विद्या, ज्ञान या बुद्धि का कोई मोल नहीं। वस्तुतः इन सभी महत्वपूर्ण अवयवों का समुचित समावेश ही हमें किसी भी प्रश्न के सत्योत्तर के प्रति निर्देशित करता है। आदिकाल से मुनष्य इसी विधा से समस्त जटिल प्रश्नों का समुचित समाधान करने में संलग्न रहा है।

पर जैसा कि अभी हमने विचार किया कि कितनी बार हमारी चित्त वृत्तियाँ, हमारे मनोविकार, हमारी कुछ ऐष्णाऐं, बुद्धि को कुंठित कर आभासी ज्ञान-विज्ञान के कुछ तर्क-वितर्कों का सहारा लेकर, हमारे विवेक को दबाने में सफल हो जाती हैं और हम उन इच्छाओं की पूर्ति की कुचेष्टा को अपने मानस पटल के समक्ष तुष्ट करने में सफल हो जाते हैं। इस लेख का शीर्षक और उपरोक्त भूमिका की पृष्ठभूमि, से संभवतः यह अनुमान लगाना कठिन नहीं, कि संकेत किस ओर है?

प्रबुद्ध, सुधि पाठकगण! कृपया ये भी न समझें कि यह लेख किसी पक्ष विशेष को पुष्ट करने के हेतु से, पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होकर लिखा जा रहा है। संभवतः लेख के अन्त तक आते-आते जिस भी भावनात्मक, दार्शनिक एवं विज्ञानपरक तथ्यों को प्रकाशित किया जायेगा, तत्पश्चात् किसी भी सत्याग्रही, संवेदनशील व्यक्ति के लिए भी कुछ संशय नही रह जायेगा, शेष महानुभाव अपने विवेक एवं रुचि अनुसार अपना निर्णय लेने में स्वतंत्र होंगे ही।

अण्डा शाकाहार है या नहीं; उससे पूर्व प्रश्न उठता है कि शाकाहार या मांसाहार? या यूँ कहें शाकाहार ही क्यूँ, मांसाहार क्यूँ नहीं?

कदाचित् इस प्रश्न का उत्तर, न तो यहाँ संदर्भ में है और न ही इस लघु लेख की सीमा में आने वाला विषय है। और वैसे भी इस विषय पर पूर्व में भी बहुत कुछ प्रकाशित व प्रचारित हो चुका है। शाकाहार की मनुष्य शरीर के लिए स्वाभाविकता, वैज्ञानिकता व रचनात्मकता पूर्णरूपेण प्रमाणित हो चुकी है। उस विषय में यहाँ उल्लेख व्यर्थ है। अतः यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि **यह लेख मात्र उन बन्धुओं के लिए है जो शाकाहार को ही मनुष्य का स्वाभाविक आहार मानते हैं, उसी के अनुरूप व्यवहार भी करते हैं; किन्तु केवल अण्डे का सन्दर्भ आते ही या तो शंकित हो जाते हैं या भ्रमित हो जाते हैं।** ये लेख संभवतः उन महानुभावों के लिए नहीं है जो सब कुछ जानते, समझते हुए भी, कुतर्कों के माध्यम से विवेक को दबा, अण्डों के सेवन को, किसी भी प्रयोजन से चाहे अपनी जिह्वा की तुष्टि के लिए

हो, चाहे स्वास्थ्यवर्धन की दृष्टि से, श्रेयस्कर मानकर अपना दुराग्रह छोड़ने के लिए तत्पर नहीं हैं। यह लेख उन लोगों के लिए सर्वथा उपयोगी हो सकता है जो केवल संशय में हैं या भ्रम में हैं और समुचित समाधान मिल जाने पर सत्य को सहर्ष स्वीकार करने हेतु इच्छुक हैं।

आइये, तो चलते हैं, विचारों और तथ्यों का मंथन और विश्लेषण करते हैं। पूरे विमर्श को सुलभ बनाने के लिए, इसे भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं।

(अ) सर्वप्रथम बात करते हैं कि क्या अण्डे को सही में शाकाहार की श्रेणी में रखा जा सकता है? इस प्रश्न को पढ़कर कुछ लोगों के मन में ये विचार उठ सकता है कि ये कैसा प्रश्न है, अण्डा कब से शाकाहार हो गया? कौन कर रहा है ऐसा अनर्गल प्रलाप? तो बन्धुओं! यही तो निवेदन है, कि कुछ महानुभाव जो शाकाहार को सही, मांसाहार को गलत तो मानते हैं, परन्तु अण्डे को यह कह कर कि ये तो निषेचित नहीं होता; इसमें से जीव की उत्पत्ति नही होती; इसके सेवन को सर्वथा उचित और शाकाहार के समतुल्य मान लेते हैं। (उल्लेखनीय है कि बाजार में मिलने वाले या Poultry Farms से बिक्री के लिए आने वाले अण्डे अधिकतर अनिषेचित (Unfertilized) होते हैं जिनमें से चूजा नहीं निकलता)।

मान्यवर, यदि चूजा नहीं निकलता तो उसका अर्थ ये तो नहीं कि उसमें जीवन नहीं होता? या जीवन धारण करने की क्षमता नही होती? चलिऐ, नीचे दिऐ हुये कुछ तथ्यों का सेवन कीजिये -

१. अण्डा निषेचित (Fertilized) नहीं भी है, तो भी उसमें एक "पूर्ण जीवित मादा जनन कोशिका" (A complete female germinative Cell-Ovum) होती है जिसमें उस मुर्गी का जनन तत्व (Genetic Material) या जिसे डी.एन.ए. (D.N.A.) कह सकते हैं उपस्थित होता है। आप समझने के लिए, चाहें तो इस Ovum की Human Female Ovum से तुलना कर सकते हैं जिसमें इसी तरह से शिशु उत्पन्न करने हेतु मादा डी.एन.ए./ Sex Chromosome समाहित होता है, जीवन से भरपूर होता है तो क्या निषेचन के अभाव में, उसे भी भक्षण योग्य माना जा सकता है?

२. अनिषेचित अण्डों में भी जीवन है, नया जीवन धारण करने की क्षमता है, इस बात से भी प्रमाणित होता है (जिन हठधर्मियों को प्रमाण की आवश्यकता है उनके लिए), कि मुर्गी से निकले हुऐ अनिषेचित अण्डों को सफलतापूर्वक प्रयोगशाला में, मुर्गे के शुक्राणुओं द्वारा

कृत्रिम रूप से निषेचित कर, चूजे का सफल निर्माण वैज्ञानिकों द्वारा किया जा चुका है।

३. यहाँ तक कि कुछ प्रयोगों में तो, इन अण्डों में मानवीय शुक्राणुओं का प्रवेश करा कर, अजीबोगरीब ही सही, किन्तु एक नये जीवन (संक्षिप्त) की उत्पत्ति भी शोधकर्त्ताओं द्वारा की जा चुकी है।

क्या यह तथ्य यह प्रमाणित नहीं करते कि अनिषेचित अण्डों में भी जीवन है?

एक और बात! निषेचित तथा अनिषेचित अण्डों को बाहर से देखकर यह पता नहीं लगाया जा सकता कि वे क्या हैं? (जब तक कि आप विभिन्न प्रकार के प्रयोग न करके देखें) इसलिए अभी भी, निषेचित अण्डों को अखाद्य, और अनिषेचित अण्डों को खाद्य मानने वाले, इस बात के लिए तैयार रहें कि अगर गलती से भी कोई निषेचित अण्डा, अनिषेचित अण्डों की भीड़ में शामिल है (Due to accidental mating of hen and cock) तो आपका बच पाना सर्वथा असम्भव है। क्या आप अपनी जिह्वा के स्वाद हेतु ये जोखिम भी उठाना चाहेंगे?

ये तो बात हुई किसी जीवन या जीवन धारण कर सकने की क्षमता रखने वाली इकाई के प्रत्यक्ष हनन की। अगर इस पर भी बात न बन रही हो, अभी भी जिह्वा का स्वाद, सत्य का प्रतिकार कर रहा हो, अब भी विवेक, लोभ के समक्ष क्षीण पड़ रहा हो तो जरा कुछ और विचार कीजिए।

- डॉ. प्रशान्त अग्रवाल
डर्मेटोलोजिस्ट एवं कास्मेटोलोजिस्ट
डर्माडेन्ट क्लिनिक, उदयपुर

क्रमशः

पुरुषार्थ का प्रेरक व्यक्तित्व

(श्री स्व. पं. रतिराम शर्मा)

संसार में कुछ ऐसे विचित्र विलक्षण प्रेरक व्यक्तित्व होते हैं जिनके विषय में केवल शब्दाश्रयी होकर विचार प्रकट नहीं किये जा सकते। मात्र शब्द उसके भावों की अभिव्यक्ति नहीं कर सकते, केवल भाषा बनकर गूँगे की भाव भंगियों के समान चेष्टामात्र रह जाते हैं। भावों का संकेत मात्र मिल सकता है। इस अभिव्यक्ति के लिए उन शब्दों को उस व्यक्ति की जीवन छाया में ही देखना होगा। जीवन की संगति में ही उनका सच्चा अर्थ जानना होगा।

संसार में कुछ ऐसे हैं जो दैव अर्थात् भाग्य को मानते हैं और कुछ ऐसे हैं जो पुरुषार्थ को मानते हैं। कतिपय ऐसे हैं जो पुरुषार्थ को दैव का उत्पादक मानते हैं, कितने ही केवल अयोग गीत गाते हैं तथा कितने ही भाग्य की विरुदावलि करवाते हैं और कुछ दैव और पुरुषार्थ दोनों के भक्त रहते हैं। कुछ अपनी असफलताओं से त्रस्त होकर दैव की शरण में चले जाते हैं और कुछ अपने पुरुषार्थ के सफल परिणामों को देखकर उद्योग के प्रशंसक बन जाते हैं। भाग्य और पुरुषार्थ के इस समन्वित और विरोधी दृष्टिकोणों के बीच स्व. पं. श्री रतिराम शर्मा निश्चितरूपेण पुरुषार्थवादी थे।

उनके समग्र जीवन पर दृष्टिपात करें तो- पुरुषार्थ, पुरुष का श्रम है, उपार्जित सम्पत्ति है। जो पुरुषार्थ के मार्ग पर प्रवृत्त रहता है, वह सदा सुखी रहता है (जो कि वह रहे)। दैव को ही सब कुछ मानकर उस पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। जिसे आंख मिली है वह अपने दृष्ट पर भरोसा करे, अदृष्ट के द्वार याचना करने क्यों जाए। यदि जन्मान्तर का उपार्जित है, प्राप्त है तो वह अवश्य अपने समय पर फलदायी होगा और यदि जन्मान्तर की हुण्डी में जमा का अंग कराना है तो उसके आश्रय बैठे रहना का फल तो स्वयं अपने विनाश का आह्वान करने के समान है। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि जन्मान्तर का अदृष्ट भाग्य का परिणाम अनुकूल भी होकर और अशुभ करने वाला भी। अतः अशुभ ही से बचने के लिए भी निरन्तर पुण्यमय उद्योग करने में मनुष्य को तत्पर रहना चाहिए।

'सूर्य अपना कार्य करते-करते डूब जाता है, चन्द्रमा अपनी कलाएं बांटते-बांटते निःशेष हो जाता है। वृक्ष अंकुरित होकर शनैः शनैः अपनी जड़ों को पाताल तक ले जाते हैं और आंधियों के प्रचण्ड वेग में खड़े रहने का सामर्थ्य पा लेते हैं। भाग्य की वाट जोहते रहने वाले को अपनी मंजिल तय करने में बड़ा श्रम होता है। वह एकदम चलता हुआ अगले पद विन्यास पर किसी आकस्मिक सहायता की इच्छा करता है। फलतः उसके पांव किसी भी क्षण प्राप्त होने वाली दैवी सहायता की संभावना में भारी रहते हैं और श्रम करते हुए भी श्रम का सच्चा आनन्द उसे नहीं मिल पाता।

भाग्य अभी तक किसी को मोक्ष द्वार तक नहीं पहुंचा पाया है। अतः पुरुषार्थ करने में सिद्धियों को आमन्त्रण देना है। सफलताओं के सागर में अवगाहन करना है। पुरुषार्थ करने वाली चींटी भी सैकड़ों योजन मार्ग तय कर लेती है और भाग्य के सहारे बैठे रहने वाला वैनतैय (गरूड़) एक कदम नहीं चल सकता।

इसी कारण अर्थात् पुरुषार्थ के बल पर उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म प्रसाद के साथ व्यापार में प्रवृत्त रहते हुए भौतिक उन्नति भी प्राप्त की। असफलता और थकान की व्यर्थ चिन्ताओं से, बिना मुरझाये चेहरे के साथ मुक्त रहे। भाग्य

श्री रतिराम जी शर्मा के सुपुत्र श्री विजय शर्मा सद्यः आर्यसमाज भीलवाड़ा के प्रधान हैं। उन्होंने ७-८ लाख रुपयों से आर्यसमाज भीलवाड़ा का कायाकल्प कर दिया है। प्रस्तुत चित्र उनके द्वारा निर्मित भव्य द्वार का है। (विजय जी शर्मा सपरिवार)

स्वयं कुछ नहीं है, मात्र पुरुषार्थ की ही गूंज है। श्रम से टपकने वाले स्वेद (पसीने) की धारा में गुलाब के मकरन्द की सुगंध उठती है। आत्मा के अनन्त वीर्य को पुरुषार्थ में नियोजित करने वाला सच्चा मेहनती है, जो कि पं. रतिराम जी थे।

अर्थ का उपार्जन धर्ममूलक होना चाहिए। काम का सेवन धर्म मूलक होना आवश्यक है। यदि काम और अर्थ के लिए धर्म का सम्बन्ध अपेक्षित नहीं होगा तो काम उच्छृंखल होकर प्रजाओं में व्यभिचार दोष उत्पन्न करेगा। और अर्थ का सम्बन्ध धर्म से रहित हो जायेगा तो अर्थ संग्रह करने वाला येन केन उपायेन पाप कपट चौर्य से पुष्कल अर्थार्जन करने लगेंगे और वृत्ति की पवित्रता नष्ट हो जावेगी। अर्थार्जत में धर्म का नियन्त्रण ही कारण होना चाहिए। धर्म ही प्रथम पुरुषार्थ है। धर्माचरण से धर्म का उपार्जन करना चाहिए। **अग्निना अग्निः समिध्यते,** अग्नि से अग्नि जलाई जाती है और दीपक से दीपक।

धर्म से ही धर्म का चिन्तन करना उचित है। अतः पुरुषार्थ के मूल में धर्म की ज्वलन्त सत्ता सन्निहित है। बिना धर्म के कोई पुरुषार्थ नहीं। मनुष्य को आत्म धर्म का पालन करते हुए सतत् पुरुषार्थ में लगे रहना चाहिए और पुरुषार्थ के साथ साथ दैव भी फलता है तो उसे भी परिश्रम का रूप मानकर अतिरिक्त पुरस्कार स्वीकार कर लेना चाहिए।

स्वगति श्री पं. रतिराम शर्मा के जीवन का निष्कर्षात्मक सत् सिद्धस्त यह है कि पुरुषार्थ और सफलता में कारण-कार्य सम्बन्ध है। सफलता रूपी कार्य पुरुषार्थ की कारणता चाहता है। पुरुषार्थ पात्र है और सफलता इसमें रखा जाने वाला पदार्थ है। मनुष्य को पात्र के लिए यत्न करना चाहिए क्योंकि पात्र में ही सम्पदाएं आती हैं। सफलता रूपी सम्पत्ति अर्जित करने के लिए पुरुषार्थ रूपी पात्रता चाहिए!

अमर है उस ऋषिवर का नाम

दिया मानव को नया स्वरूप
मनुजता को अभिनव शृंगार,
अंध विश्वासों से उन्मुक्ति
मुक्त हैं सदाचार के द्वार,
किया अवनी को जिसने धन्य,
बनाया घर-आंगन सुख-धाम!
अमर है उस ऋषिवर का नाम।।
विजय के तुम सुस्मित उल्लास
बदल डाला तुमने इतिहास,
बताया तुमने ऐसा पंथ
जहां पर हो न विरोधाभास,
नियति का यहां समापन और
प्रगति को मिलता है विश्राम।
अमर है उस ऋषिवर का नाम!!
तुम्हारा रहा एक ही लक्ष्य
मनुज का अन्तर हो अविकार,
हंसी से गूंजे सारा लोक
सुखी हो कल्पवृक्ष का द्वार,
सत्य, शिव, सुन्दर की प्रतिमूर्ति
समर्पित श्रद्धांजलि अभिराम!
अमर है उस ऋषिवर का नाम!!

-श्रीमती प्रेमकुमारी ठाकुर

वरिष्ठ नागरिकों (सीनियर सिटीजन्स)

को उपलब्ध सुविधाओं व अधिकारों की महत्वपूर्ण जानकारियाँ

आज पूरे भारत देश में लगभग १८ प्रतिशत वरिष्ठजन ६० वर्ष या ६० वर्ष से अधिक उम्र के हैं। आमतौर पर वरिष्ठ नागरिक (पुरुष एवं स्त्री) को राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा मिलने वाली कल्याणकारी योजनाऐं एवं सुविधाओं की जानकारी नहीं होती है तथा ना ही कोई अच्छी तरह बताना चाहता है। वरिष्ठजनों की निजी, सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा को देखते हुए मेरे द्वारा, जनहित में कुछ विशेष प्रदत्त सुविधाओं एवं लाभ तथा अधिकारों की जानकारियों का संकलन किया गया है, कृपया आप सभी पढ़कर इन सभी प्रदत्त सुविधाओं का पूर्णतया लाभ उठायें। यहाँ वरिष्ठजनों की उम्र ६० वर्ष या ६० वर्ष से अधिक को माना गया है। समस्त प्रदत्त सुविधाओं के लिए मूल पहचान पत्र के रूप में १५ तरह के प्रमाणों को माना गया है। जो इस प्रकार हैं- पासपोर्ट, पेन कार्ड, आधार कार्ड, वोटर कार्ड, ड्राईविंग लाईसेंस, राशन कार्ड, राज्य या केन्द्रीय पहचान पत्र, बैंक पासबुक, क्रेडिट कार्ड, कॉलेज कार्ड, पी.पी.ओ. प्रपत्र, वरिष्ठ नागरिक कार्ड, बीपीएल कार्ड, ईएसआई कार्ड व पी.जी.एच.एस. कार्ड आदि। अधिक जानकारी सीनियर सिटीजन बोर्ड की ऑनलाईन वेबसाईट तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से प्राप्त कर सकते हैं। सीनियर सिटीजन्स को कई विभागों में विशेष सुविधा प्रदान की गयी हैं जो इस प्रकार हैं-

१. **राज. पेंशनर समाज जिला उदयपुर-** सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों के लिए पेंशनर समाज अच्छे कार्य करने का, सेवा का अवसर देता है। इनके द्वारा कई अच्छे सेवा प्रकल्प निरन्तर गतिमान हैं जिसमें अपनी सेवा दे सकते हैं। सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कठिनाईयों के निराकरण हेतु विशेष निःशुल्क सेवा प्रकल्प भी चल रहा है जिसमें रोज कई पेंशनर सेवा लेते हैं।

२. **हॉस्पीटल सेवा :-**

(अ) वरिष्ठ जनों को डॉक्टर द्वारा विशेष चिकित्सा सुविधा प्रदान की गयी है।

(ब) कई जगहों पर दवा का भी निःशुल्क प्रावधान रखा गया है। जिसके खर्च की कोई सीमा नहीं है।

(ब) हॉस्पीटल में डॉ. स्लिप, भर्ती रोगी टिकट, समस्त जांचें, ऑपरेशन, आंखों के लेंस एवं ब्लड सुविधा निःशुल्क प्रदान की गयी है।

३. **हवाई सेवा :-** इसमें विशेष टिकट योजना के तहत वरिष्ठ जनों को ५० प्रतिशत तक की यात्रा किराया राशि में छूट दी जाती है जिसमें देय टेक्स अलग से जोड़ा जाता है।

४. **रेलवे सेवा :-**

(अ) सीनियर सिटीजन्स को टिकिट किराया राशि में पुरुष को ४० प्रतिशत तथा महिला को ५० प्रतिशत छूट दी गयी है। यहां रेलवे में वरिष्ठ महिला की उम्र ५८ वर्ष मानी गयी है। जबकि वरिष्ठ पुरुषों की उम्र ६० वर्ष मानी गयी है। इसमें आयु के बाबत प्रमाण पत्र मांगने पर दिखाना होता है।

(ब) रेलवे में यात्रा करने वाले वरिष्ठ जनों को आरक्षण देने में सुविधा प्रदान की गयी है। जिसमें सुविधाजनक निचली सीट देने का भी प्रावधान है।

५. **राजस्थान रोडवेज बस सेवा :-**

(अ) सीनियर सिटीजन को टिकट किराया राशि में ३० प्रतिशत छूट प्रदान की गयी है। इसमें आयु ६५ वर्ष रखी गयी है। जिसमें आयु प्रमाण पत्र मांगने पर दिखाना

होता है।

(ब) बसों में वरिष्ठ जनों को सीट दिलाने की जिम्मेदारी भी परिचालक को दी गयी है जो कि आरक्षित होती है।

(स) ८० वर्ष से अधिक उम्र वाले वरिष्ठ जनों को निःशुल्क यात्रा का प्रावधान भी किया गया है।

६. देवस्थान विभाग सेवा :-

(अ) वरिष्ठ जनों को वरिष्ठ तीर्थ यात्रा योजना का प्रतिवर्ष

लाभ लेने का प्रावधान रखा गया है। इसमें हवाई सेवा का भी लाभ दिया जाता है।

७. समाज कल्याण विभाग सेवा :-

(अ) वरिष्ठ जनों के लिए हेप्पी इवेंट्स तथा समस्या समाधान की विशेष व्यवस्था का प्रावधान रखा गया है।

(ब) वरिष्ठों के लिए वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम की भी सुविधा का प्रावधान रखा गया है। उदयपुर में तारा सेवा संस्थान, २३६, हिरण मगरी, से. ६ तथा पूजा संस्थान मु. गोराणा, तह. झाडोल, (फलासिया) उदयपुर में है। राज्य सरकार द्वारा १५० वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धावस्था गृह का प्रावधान है।

८. पेंशन सहायता :-

(अ) राज्य के वरिष्ठ जनों को आर्थिक सहायता के रूप में 'मुख्यमंत्री वृद्धजन सम्मान पेंशन योजना' का लाभ दिया गया है इसमें पुरुष की आयु ५८ तथा महिला की आयु ५५ वर्ष मानी गयी है।

(ब) केन्द्र द्वारा वरिष्ठ जनों की आय तथा जीवन निर्वाह का कोई नियमित आय स्रोत नहीं हो तो आयु सीमा के तहत अलग - अलग उम्र के हिसाब से पेंशन राशि भी अलग अलग देय है।

(स) राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना का भी प्रावधान रखा गया है।

(द) वरिष्ठ नागरिक जो अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं तो अपनी संतान या उत्तराधिकारी से मासिक भत्ता प्राप्त करने के लिए कानूनी कार्यवाही विशेष शर्तों के तहत कर सकते हैं। इसमें अधिकतम १०,०००/- प्रतिमाह तक मिल सकता है। यह भरण पोषण एवं कल्याण अधिनियम २००७ के तहत् है।

९. रजिस्ट्री विभाग सेवा :- वरिष्ठजनों द्वारा जमीन जायदाद की रजिस्ट्री करवाने पर पुरुष एवं महिलाओं को अलग-अलग छूट का प्रावधान रखा गया है।

१०. न्याय विभाग सेवा :- वरिष्ठ नागरिकों के प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर जल्दी निपटाने का प्रावधान रखा गया है।

११. पुलिस विभाग सेवा :- वरिष्ठों को गवाह व बयान के लिए थाना नहीं ले जा सकते। घर पर ही बयान लेने का प्रावधान रखा गया है।

१२. पोस्ट ऑफिस सेवा :- वरिष्ठ नागरिकों के लिए वरिष्ठ नागरिक बचत योजना जिसमें ८ प्रतिशत दर से ब्याज का प्रावधान रखा गया है।

१३. एल.आई.सी. सेवा :- वरिष्ठ नागरिकों के लिए इसमें प्रधानमंत्री वय वंदना योजना शुरू की गयी है इसमें एक मुश्त जमा राशि पर आकर्षक ८ प्रतिशत मासिक पेंशन प्रतिमाह मिलती है। यह प्लान नं. ८४२ है। इसमें १.५ लाख से ७.५ लाख रु. तक जमा करवा कर पेंशन प्रतिमाह प्राप्त कर सकते हैं। इसमें और भी अन्य योजनाओं का प्रावधान है जिसमें आप आयकर के तहत छूट ले सकते हैं।

१४. बैंक सेवा :-

(अ) केन्द्रीय व निजी बैंकों में :- सीनियर सिटीजन्स को आम ग्राहकों के मुकाबले अधिक दर से जमा राशि पर ब्याज दिया जाता है जो अधिकतम आधा प्रतिशत अधिक होता है।

(ब) आर.बी.आई. के अनुसार वरिष्ठ जनों को सभी बैंकिंग कार्यों को पूरा करने के लिए विशेष प्राथमिकता देने वाले समर्पित काउंटर की सुविधा प्रदान की गयी है।

(स) वरिष्ठ जनों के द्वारा जमा राशि पर कोई टी.डी.एस. की कटौती का प्रावधान नहीं है। इसमें १५ जी या १५एच फार्म प्रति वर्ष अप्रैल माह में देना होता है।

(द) बैंक में जमा राशि (अधिकतम १५ लाख) वरिष्ठ नागरिक स्कीम के तहत जमा होने पर ८.६० प्रतिशत ब्याज मिलता है।

(य) यदि सीनियर सिटीजन बैंक से भुगतान प्राप्त करने हेतु आने में असमर्थ हैं तो इनके अंगूठे का निशान चैक या विण्ड्रोल फार्म लिया जाकर प्रमाणीकरण हेतु दो पहचान व्यक्ति जिन्हें बैंक जानता हो कराया जाना चाहिये। इसमें एक बैंक का जिम्मेदार व्यक्ति होना चाहिये।

(र) पेंशनरों को यदि भुगतान निश्चित तिथि के बाद होता है तो पेंशनर बैंक से ८ प्रतिशत ब्याज विलम्ब से लेने का हकदार है।

१५. आयकर विभाग सेवा :-

(अ) वरिष्ठ नागरिकों के लिए ८० वर्ष आयु तक में रुपया ३ लाख तक की वार्षिक आमदनी पर कोई आयकर देय नहीं है। तत्पश्चात् वार्षिक आय अनुसार १०-२०-३० प्रतिशत आयकर देना होता है।

(ब) अति वरिष्ठ नागरिकों के लिए ८० वर्ष से अधिक आयु तक में रुपया ५ लाख तक की वार्षिक आमदनी पर कोई आयकर देय नहीं है।

(स) अलग-अलग विशेष बीमारी के तहत वरिष्ठ जन अपनी आयकर में छूट ले सकता है।

१६. सामान्य :-

(अ) वरिष्ठ जनों को सार्वजनिक एवं सरकारी कार्यक्रम में शामिल होने पर सम्मानजनक स्थान दिया जाता है।

(ब) कुछ विशेष परिस्थितियों में असहाय एकाकी जीवन जी रहे एवं चलने में असमर्थ वरिष्ठजनों को उनका राशन घर पर ही पहुंचाने का प्रावधान रखा गया है। इसमें खाद्य विभाग द्वारा कूपन जारी किया जाता है।

(स) सेवानिवृत राज्य कर्मचारियों को उचित मानदेय पर ६० वर्ष बाद, ६५ वर्ष की उम्र तक पुनः राजकीय सेवा में रखने का प्रावधान रखा गया है।

(द) राज्य सरकार द्वारा सेवानिवृति बाद प्राप्त राशि राज्य बीमा एवं जी.पी.एफ. के संबंधित विभाग में ही जमा रखने पर राशि पर ८.५ प्रतिशत ब्याज देने का प्रावधान है। इस पर आयकर की कोई कटौती नहीं होती है।

विशेष :- इस लेख में दी गई जानकारियां प्रस्तुत करने में विशेष सावधानी रखी गयी है। इसमें प्रक्रिया, आयु सीमा एवं शुल्क आदि में परिवर्तन हो सकता है। यह जनहित में किया प्रयास है। कृपया अधिकृत जानकारी को ही उचित समझा जावे।

- कैलाश नुवाल
7, पन्नाविहार, न्यू भूपालपुरा
उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

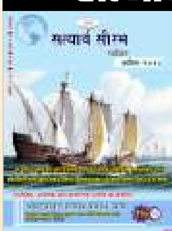

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ 25 पर देखें।

बुवाबाजी

ढकोसलों को जीवन में स्थान देने का मतलब अंधविश्वास के खतरे को मोल लेना है, जहाँ पर प्रत्यक्ष शोषण होता है, वहाँ पर लोग इस बात को मानते हैं। आज भी गाँवों के लोग काला जादू, भानमती के विषय को लेकर एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं। खूनखराबा होता है। हजारों रुपयों की क्षति भी होती है। इसे रोकना जरूरी हो गया है। देश में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की बहुत कमी है। इसके विरुद्ध आवाज उठाने की बजाय लोग दैवी इलाजों के जरिए अपना शारीरिक और मानसिक नुकसान तो कर ही लेते हैं, साथ ही समाज में एक गलत संदेश भी पहुँचाते हैं। मानसिक बीमारियों के कारण तो और भी गंभीर हालात पैदा होते हैं। 'मन बीमार होता है' की बात देश के लोग हजम नहीं कर पाते और व्यक्ति के 'विचित्र व्यवहार' को 'बाहर की पीड़ा' समझा जाता है। स्वाभाविक रूप से इस पीड़ा का इलाज बाबा, बुवा और गुरु के पास ही किया जाता है। अमूल्य समय, बुद्धि, पैसा एवं स्वास्थ्य तक की बरबादी हो जाती है। मरीज ठीक होने की बजाय और बीमार हो जाता है। जीवन की निरर्थकता की भावना से पीड़ित महिलाएँ बाबा के भुलावे में आ जाती हैं। परिणामस्वरूप उनके चरित्र पर आँच आ जाती है। ढकोसले के कारण पहले ही अंधविश्वासी बना मन और भी बौरा जाता है। प्रारब्ध, नियति, दैवी दंड जैसी कल्पनाओं का प्रभाव सामाजिक जीवन पर गहराई से पड़ता है। 'गुनाहों का देवता' बने बाबा की व्यवस्था में संचित धन, सत्ता, जनसंचार माध्यम एवं गुंडों का आतंक स्वस्थ सामाजिक जीवन को हानि पहुँचाता है। **राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिनिधि जब बाबा को साष्टांग नमस्कार करते हैं तब जनतंत्र ही धोखे में आ जाता है। यह यथार्थ है और इससे जो मानसिक गुलामी फैलती है, वह अधिक गंभीर समस्या बनती है।**

बुवा और बाबा के संदर्भ में अध्ययन करने पर कौन सा चित्र सामने आता है? इस देश में संत-महात्माओं ने धर्म के माध्यम से मानवता एवं करुणा का मार्ग बताया और कृति भी की। बुवा, बाबा, गुरु, संत साहित्य का उपयोग अपनी सुविधा के लिए करते हैं। मुँह से संतों की वाणी का खुश्क उच्चारण करनेवाले ये लोग बड़े मतलबी और आत्मकेंद्रित होते हैं।

उनका रहन-सहन मानो व्यक्ति की महिमा बढ़ाने वाला तंत्र ही होता है। बाबा के भक्त विशिष्ट रंगों के वस्त्र पहनते हैं। गले में मालाएँ पहनते हैं। सीने पर गुरु की छविवाला बिल्ला लटकाकर घूमते हैं। जेब में लटकी कलम पर भी बाबा का

फोटो होता है। गुरु इन लोगों को जो छोटा-मोटा मंत्र देते हैं, उन्हें वह जीवन का उद्धार करने वाले सांकेतिक वचन मानने लगते हैं। यह माहौल लोगों में एकता का निर्माण करता है। उसमें संतोष एवं सामर्थ्य होता है। धीरे-धीरे भक्त इस माहौल के आदी हो जाते हैं। एकाध इस माहौल से थोड़ा बाहर जाने की कोशिश करता है तो उसे चौखट से बाहर न झाँकने की हिदायत दी जाती है। यह सब कुछ एक खुफिया माहौल तैयार करता है। बाबा या साधु आश्रम में रहते हैं। आश्रम चाहे नरेंद्र महाराज का हो या स्वयं को भगवान माननेवाले ओशो का, प्रक्रिया समान ही होती है। इस प्रक्रिया में अटके लोगों को एकमात्र भक्ति ही जीवन का अंतिम कर्तव्य लगती है। गुरु का विरोध करना महापाप समझा जाता है, विरोधी दुर्जन लगते हैं और उनका सर्वनाश पुण्य का काम माना जाता है। गुरु के अनुग्रह से जीवन का कल्याण होगा और संसाररूपी भवसागर को पार किया जा सकेगा, ऐसे संदेश भक्तों के मन पर कुरेदे जाते हैं। तब भक्त एक कट्टर सैनिक बन जाता है। गुरुगिरी के ढकोसले मानो अभेद्य चक्रव्यूह बन जाते हैं। इसे मजबूत बनाने के लिए निरंतर ब्रेन वाशिंग एवं कंडिशनिंग जारी रहती है। भक्त सम्मोहित होते हैं। ऐसी अवस्था में उनकी चौकन्नी वृत्ति शिथिल हो जाती है। गुरु, बाबा पर तीव्र भक्ति और प्रीति के कारण सम्मोहन की अवस्था में भक्त शीघ्र ही पहुँचते हैं। संवेदनाओं के भ्रम तैयार होते हैं। आस-पास कुछ न होते हुए भी चंदन की खुशबू आने लगती है। देवताओं के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। भाग्यवान भक्तों को अपने महाराज के रूप में देवता के दर्शन होते हैं। दैवी साक्षात्कार का गवाह बनने का पुण्यलाभ होता है। बाबा के शब्द मानो मोक्ष का मार्ग खोल देते हैं। मंत्रमुग्ध कर देनेवाले वातावरण में तल्लीन हुए भक्तों से एक ही संदेश मिलता है, 'हमारे जीवन की पूरी जिम्मेदारी बाबा ने ली है, यह भाग्य खुल जाने का संकेत है। जीवन की सारी चिंताएँ मिट गई हैं। सुख, शांति, संतोष, संपन्नता के महाद्वार खुलनेवाले हैं। बाबा के आशीर्वाद से हमें एक ही समय में भौतिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, पारलौकिक अधिकार प्राप्त हो गए हैं।' यह मानसिकता एक गूढ़ वातावरण तैयार करती है जिसमें मनुष्य प्रश्नों को सुलझाने के लिए जरूरी विवेक खो देता है। वह अपनी और समाज की बुद्धि, श्रम और समय को मुफ्त गँवा देता है।

अंधविश्वास निर्मूलन समिति चमत्कारों का विरोध करती है। क्योंकि वे उपर्युक्त मानसिकता के निर्माण में कलियुग के नारद बनते हैं, ऐसे भक्तों को विवेकानंद का उदाहरण देना चाहिए। अमेरिकन अखबारों ने विवेकानंद से चमत्कार दिखाने की विनती की। उससे इनकार करते हुए विवेकानंद दहाड़े, 'मैं कोई चमत्कार दिखानेवाला जादूगर नहीं। पंचेंद्रियों को अजब लगनेवाली घटनाएँ घटती रहती हैं जो प्रकृति के नियमानुसार होती हैं। मंत्रमुग्ध मन की समझ में ये खेल नहीं आते। लेकिन सुशील लोग ऐसे झमेलों में नहीं पड़ते।'

ढकोसले और चमत्कारों का शिकार बना मन मानसिक गुलामी को जन्म देता है। वर्तमान में भारतीय समाज की रचना अथवा व्यवस्था मूलतः दैववाद की बुनियाद पर खड़ी है। कोई भी छोटा-बड़ा संकट उनके लिए भाग्य का फेर होता है। लोग मानते हैं कि दैवी शक्ति को प्राप्त किए बाबा हमें संकटों से मुक्ति दिलाएँगे। **समस्याओं का मुकाबला करने की बजाय चमत्कार के अंधविश्वासी लोग ढकोसले की ओर मुड़ते हैं।** हमारा समाज, अनिष्ट रूढ़ियाँ, कर्मकांड जैसे अंधविश्वासों के चक्रव्यूह में फँसा हुआ है। इसीलिए वह संवेदनाशून्य एवं डरपोक बन गया है। आत्मविश्वास के साथ, प्रयत्नों के साथ एकाध समस्या का सामना करना अथवा साहस से किसी कर्तव्य को पूरा करना इन लोगों के बस में नहीं होता। कठिन यथार्थ से डरकर लोग अपनी बुद्धि और स्वाभिमान को ओझा-गुनी या बाबा के पास गिरवी रख देते हैं। बाबा का प्रभावी हथियार चमत्कार ही होता है। इसीलिए समाज को स्वाभिमानी, प्रयत्नवादी एवं निडर बनाने के लिए उनके चमत्कारों का विरोध करना जरूरी है।

मान्यता है कि यह चमत्कार सिद्धि के कारण संभव होते हैं। ऐसी सिद्धि बाबा को उनकी शक्ति से प्राप्त होती है, लेकिन

हमारी धर्म-परंपरा यह भी कहती है कि इन सिद्धियों के मोहजाल में नहीं फँसना चाहिए, उनकी उपासना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह बहुत क्षुद्र होती है। संत-महात्माओं ने भी बहुत बार सचेत किया है कि सिद्धि-चमत्कार के मायाजाल में जो फँस जाएगा, उसकी अवनति होगी। जिनके मन में सच्चा धर्मभाव है, वे हमेशा से ही चमत्कार के विरोधी रहे हैं। संत साहित्य ने हमेशा ही ऐसे लोगों को दुत्कारा है जो चमत्कारों के जरिए शिष्यों की भीड़ जमा करते हैं, ऐसे चमत्कार करनेवाले गुरु से दूर रहने के लिए कहा गया है। पल भर के लिए मान

लेते हैं कि हाथ से सोने की अँगूठी अथवा चेन निकालनेवाले सत्य साईं बाबा के पास अद्‌भुत शक्ति थी तो यह प्रश्न हम पूछ सकते हैं कि आर्थिक समस्याओं से घिरे अपने देश के लिए उन्होंने क्या किया? एकाध वर्ष बारिश न होने के कारण अकाल पड़ जाता है, कभी अधिक बारिश होने से बाढ़ आती है, ऐसे समय बाबा अपना चमत्कार क्यों नहीं दिखाते? अकाल पड़ने पर बारिश लाना और बाढ़ आने पर उसे रोक देने का चमत्कार क्यों नहीं किया जाता है? अपनी इस दैवी शक्ति का उपयोग वे कभी भी लोककल्याण अथवा समाजहित के लिए नहीं करते अर्थात् ऐसी कोई क्षमता इन बाबाओं में नहीं होती है। ऐसे लोगों से दूर रहना ही अक्लमंदी है क्योंकि धर्म के आचरण से इनका कोई संबंध नहीं।

चमत्कारों को माननेवाले लोग इन बाबाओं की ओर क्यों जाते हैं? वे वासना और स्वार्थ का त्याग करने के लिए नहीं जाते। उदात्त और पवित्र होने के लिए भी वे नहीं जाते, बल्कि उन्हें किसी लाभ की अभिलाषा होती है। किसी को नौकरी की इच्छा होती है। किसी को नौकरी में पदोन्नति की इच्छा होती है, कोई काले धंधे से निर्दोष छूटना चाहता है। अपने दुष्कृत्यों की टीस लोगों के मन में हमेशा बनी रहती है, पाप के कारण होनेवाले लाभ का त्याग नहीं किया जाता, लेकिन विवेकबुद्धि की टीस से मुक्त होने के लिए लोगों को बाबा और बुवा के पास जाना आसान और सुरक्षित लगता है। अपनी दैवी शक्ति का करिश्मा दिखानेवाले बाबा तथा उच्च आध्यात्मिक उद्‌घोषणा करनेवाले बाबा लोगों के अधिक समीप होते हैं। यह मानना गलत है कि धार्मिक प्रवृत्ति के लोग ढकोसले के पीछे चलते हैं। इसके विरुद्ध नैतिकता की दृष्टि से अधार्मिक भक्त अपनी भ्रष्टता को सुरक्षित रखने के लिए बाबा या साधुओं के पीछे पड़ते हैं। इस प्रकार भ्रष्ट मानसिकता का ढकोसले के माध्यम से पोषण होता है।

भारतीय संविधान में यह स्पष्ट किया गया है कि 'प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शोधक बुद्धि, सुधारवाद एवं मानवतावाद का प्रसार करे।' वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ यह विश्वास होता है कि समूचा विश्व कार्य-कारण भाव से बद्ध है। शोधक बुद्धि का अर्थ सजग दृष्टि से यथार्थ की ओर देखना है, अथवा उसके लिए प्रयत्न करना है। सुधारवाद का अर्थ है, जो परंपरा से हो रहा है, उसका आधुनिक दृष्टि से जायजा लेकर उसमें निहित वैयक्तिक और सामाजिक हित जैसी बातों का चयन करना। मानवतावाद का अर्थ बंधुत्व की वैश्विक भावना है। भारतीय संविधान का बताया हुआ यह कर्तव्य और ढकोसले के कारण पनपी मानसिकता एक-दूसरे से असंगत है। इसका अर्थ यह है कि ढकोसले की शरण में जानेवाला मन अपने संवैधानिक कर्तव्य को टालता है। अतएव प्रत्येक मनुष्य को इन सब बातों पर विवेकपूर्वक विचार कर प्रशस्त मार्ग का संधारण करना चाहिए।

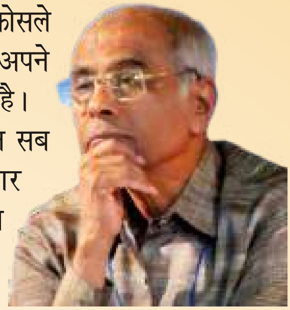

- स्व. डॉ. नरेन्द्र डाभोलकर

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

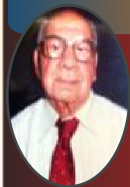

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

कथा सरित

एक दंपति दीपावली की खरीददारी करने की हड़बड़ी में था! पति ने पत्नी से कहा- जल्दी करो मेरे पास 'टाईम' नहीं है... कह कर रूम से बाहर निकल गया, तभी बाहर लान मे बैठी 'माँ' पर नजर पड़ी। कुछ सोचते हुए वापिस रूम में आया।.. ..शालू तुमने माँ से भी पूछा कि उनको दीपावली पर क्या चाहिए....।

शालिनी बोली-'नहीं पूछा, अब उनको इस उम्र में क्या चाहिए होगा, दो वक्त की रोटी और दो जोड़ी कपड़े। इसमें पूछने वाली क्या बात है..... ?

'वो बात नहीं है शालू... माँ पहली बार दीपावली पर हमारे घर में रुकी हुई हैं वरना तो हर बार गाँव में ही रहती हैं तो... औपचारिकता के लिए ही पूछ लेती.........।

'अरे इतना ही माँ पर प्यार उमड़ रहा है तो खुद क्यूँ नहीं पूछ लेते?' झल्लाकर चीखी थी शालू, और कंधे पर हेंड बैग लटकाते हुए तेजी से बाहर निकल गयी......।

सूरज माँ के पास जाकर बोला 'माँ हम लोग दीपावली की खरीददारी के लिए बाजार जा रहे हैं आपको कुछ चाहिए तो.. '

माँ बीच में ही बोल पड़ी मुझे कुछ नहीं चाहिए बेटा....

सोच लो माँ अगर कुछ चाहिये तो बता दीजिए.....

सूरज के बहुत जोर देने पर माँ बोली ठीक है तुम रुको मैं लिख कर देती हूँ, तुम्हें और बहू को बहुत खरीददारी करनी है कहीं भूल ना जाओ। कहकर, सूरज की माँ अपने कमरे में चली गई, कुछ देर बाद बाहर आई और लिस्ट सूरज को थमा दी।....

सूरज ड्राइविंग सीट पर बैठते हुए बोला, देखा शालू माँ को भी कुछ चाहिए था पर बोल नही रही थीं मेरे जिद करने पर लिस्ट बना कर दी है, 'इंसान जब तक जिंदा रहता है, रोटी और कपड़े के अलावा भी बहुत कुछ चाहिये होता है'

अच्छा बाबा ठीक है।

पूरी खरीददारी करने के बाद शालिनी बोली अब मैं बहुत थक गयी हूँ, मैं कार में बैठती हूँ आप माँ जी का सामान देख लो।

देखता हूँ माँ ने इस दीपावली क्या मंगाया है... कहकर माँ की लिखी पर्ची जेब से निकालता है, बाप रे इतनी लंबी लिस्ट, पता नहीं क्या क्या मंगाया होगा, जरूर अपने गाँव वाले छोटे बेटे के परिवार के लिए बहुत सारा सामान मंगाया होगा,.......

पर ये क्या सूरज की आंखों में आंसू... ..... लिस्ट पकड़े हुए हाथ सूखे पत्ते की तरह हिल रहा था..... पूरा शरीर काँप रहा था।

शालिनी बहुत घबरा गयी क्या हुआ ऐसा क्या मांगा है तुम्हारी माँ ने कह कर सूरज के हाथ से पर्ची झपट ली....

हैरान थी शालिनी भी इतनी बड़ी पर्ची में बस चंद शब्द ही लिखे थे.....

पर्ची में लिखा था....

'बेटा सूरज मुझे दीपावली पर तो क्या किसी भी अवसर पर कुछ नहीं चाहिए फिर भी तुम जिद कर रहे हो तो, तुम्हारे 'शहर की किसी दुकान में अगर मिल जाए तो फुर्सत के कुछ 'पल' मेरे लिए लेते आना.... ढलती साँझ हुई अब मैं, सूरज! मुझे गहराते अँधियारे से डर लगने लगा है, बहुत डर लगता है पल पल मेरी तरफ बढ़ रही मौत को देखकर....जानती हूँ टाला नहीं जा सकता शाश्वत सत्य है,...... पर अकेलेपन से बहुत घबराहट होती है सूरज ...... तो जब तक तुम्हारे घर पर हूँ कुछ पल बैठा कर मेरे पास,कुछ देर के लिए ही सही,बाँट लिया कर मेरा बुढ़ापे का अकेलापन... . बिना दीप जलाए ही रौशन हो जाएगी मेरी जीवन की साँझ....कितने साल हो गए बेटा तुझे स्पर्श नहीं किया, फिर से आ मेरी गोद में सर रख और मैं ममता भरी हथेली से सहलाऊँ तेरे सर को एक बार फिर से इतराए मेरा हृदय मेरे अपनों को करीब बहुत करीब पा कर....और मुस्कुरा कर मिलूं मौत के गले। क्या पता अगली दीपावली तक रहूँ ना रहूँ.....

पर्ची की आखिरी लाइन पढ़ते पढ़ते शालिनी फफक, फफक कर रो पड़ी.....

ऐसी ही होती है माँ.....

मित्रों! आपके घर के वे विशाल हृदय वाले लोग, जिनको आप बूढ़े और बुढ़िया की श्रेणी में रखते हैं वो आपके जीवन के कल्पतरु हैं! उनका यथोचित सम्मान और आदर और सेवा-सुश्रूषा और देखभाल करें, यकीन मानिए आपके भी बूढ़े होने के दिन नजदीक ही हैं...उसकी तैयारी आज से कर लें! इसमें कोई शक नही आपके अच्छे-बुरे कृत्य देर-सवेर आप ही के पास लौट कर आने हैं!!

- सोशल मीडिया

जीवन में स्वस्थ रहने के लिए अपनायें 7 तरीके

1. भोजन में संतुलन अपनायें

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खाना या भोजन प्रमुख भूमिका निभाता है। अगर आपका खाना अच्छा और पौष्टिक होगा तो वह आपकी सेहत को भी अच्छा बनाएगा। आयुर्वेद में कहा गया है कि आप अपनी प्रकृति के हिसाब से ही आहार लें। इसलिए अपने प्रतिदिन के भोजन में विटामिन्स, प्रोटीन्स, वसा, कार्बोहाइड्रेट, मिनरल्स आदि सभी चीजों को संतुलित मात्रा में शामिल करे।

2. अपनी दिनचर्या को रखें संतुलित

हमारी दिनचर्या का जितना प्रभाव हमारी सफलता पर होता है उतना ही असर इसका हमारे स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। अगर आपकी दिनचर्या बहुत संतुलित होगी तो आपका स्वास्थ्य भी उतना ही अच्छा रहेगा। आप रोज सुबह ६ बजे उठते हैं तो हल्का व्यायाम या प्रातःभ्रमण करने के बाद नहा लें, फिर अपने रोजाना के समय पर नाश्ता करें और नाश्ता करने के बाद १५ मिनट आराम करें। दोपहर २ बजे तक लंच कर लें। दोपहर का भोजन करने के बाद १५ मिनट तक चुपचाप बैठकर आराम करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है। रात को जितना शीघ्र हो भोजन ले लेना चाहिए। फिर भोजन के १ या २ घंटे के बाद ही सोना चाहिए। भोजन के बाद आधे घंटे तक टहलना भी काफी अच्छा होता है।

3. ऋतुचर्या को न करें नजरअंदाज

ऋतुचर्या का मतलब है ऋतु के मुताबिक हो जाना। जैसे ऋतु के बदल जाने पर प्रकृति में बदलाव दिखाई पड़ता है, उसी तरह हमें अपने खान-पान, रहन-सहन, दिनचर्या और योगासनों में भी बदलाव कर लेना चाहिए। प्रकृति ने हर ऋतु के अनुकूल फल, सब्जी और खाद्य पदार्थ बनाये हैं। **किसी अन्य ऋतु में पैदा होने वाली चीजों को किसी अन्य ऋतु में सेवन नहीं करना चाहिए।** उदाहरण के तौर पर,कोल्ड स्टोरेज में रखा तरबूज या बेल, बरसात के महीने में सेवन नहीं करना चाहिये यही नियम अन्य चीजों पर भी लागू होता है।

4. योगासन अपनाकर रहें स्वस्थ

आज योग हमारे जीवन में अपना प्रमुख योगदान निभा रहा है। योग करना आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। योग द्वारा कई लोगों ने गंभीर बीमारियों से निकलकर

स्वस्थ जीवन पाया है। हमें ऋतुचर्या के मुताबिक ही योगासन और मुद्राओं का अभ्यास करना चाहिए। मानसिक सेहत के लिए भी कई मुद्राएँ हैं, जिन्हें रोजाना करना चाहिए। जैसे- ज्ञान मुद्रा, यह मुद्रा अंगूठा और तर्जनी को मिलाने से बनती है। इसको रोजाना करने से याददाश्त बढती है और मानसिक बीमारियों को दूर करने में मदद मिलती है।

5. पाजिटिव सोच अपनायें

सकारात्मक सोच हमारे जीवन में कितनी बड़ी भूमिका अदा करती है यह आप जरुर जानते होंगे। ज्यादातर तनाव और अवसाद जैसी समस्याएं नेगेटिव सोच की वजह से पैदा होती हैं। आपको अपनी सकारात्मक सोच को बढाने के लिए रोजाना भ्रामरी का अभ्यास करना चाहिए।

6. खुलकर हँसने का प्रयास करें

अगर मैं आपसे यह कहूँ कि आप एक रूठे हुए इन्सान या एक हँसते हुए इन्सान में से किसी एक का चुनाव करें तो आपकी पसंद वह हँसता हुआ इन्सान ही होगा। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सभी लोग हँसते-मुस्कराते हुए व्यक्ति के साथ रहना ही पसंद करते हैं। कई शोधों से भी यह बात साबित हुई है कि रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने, शारारिक और मानसिक सेहत को बेहतर करने, पाचन क्रिया को बढ़ाने तथा याददाश्त बढ़ाने के लिए खुल कर हंसने से बेहतर और कोई उपचार, दवा या तरीका नहीं है और न ही कोई आसन या प्राणायाम ही है।

7. तन व मन में रखे संतुलन

अगर आपका काम मानसिक रूप से अधिक होता है तो खाली समय में थोड़ा बहुत शारारिक कार्य भी करें और अगर वहीं आप शारारिक कार्य अधिक करते हैं तो खुद को मानसिक रूप से बेहतर रखने के लिए अपने आप को समय दे। शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य में उचित संतुलन आवश्यक है और वही व्यक्ति स्वस्थ कहलाने का अधिकारी है।

साभार- अन्तर्जाल

समाचार

श्री पूनम सूरी जी को बहुत बहुत बधाई

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता श्री पूनम सूरी पुनः डी.ए.वी. प्रबंधकर्तृ समिति के प्रधान पद पर नियुक्त किये गए हैं। श्री सूरी जी एक निष्ठावान आर्य के रूप में सुविख्यात हैं। आपके नेतृत्व में डी.ए.वी. अपेक्षित उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ है। आगे भी यही अभिलाषा है कि मान्य सूरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. संस्था के विद्यालयों में वैदिक संस्कृति का अधिकाधिक पल्लवन और उन्नयन होगा। न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सूरी जी को बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। **-अशोक आर्य**

ग्राम नैनोरा में यजुर्वेद पारायण यज्ञ संपन्न

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सोमदेव जी शास्त्री अपने पैतृक गाँव नैनोरा में विगत ३२ वर्षों से निरंतर प्रतिवर्ष वेद पारायण यज्ञ का भव्य कार्यक्रम करते रहे हैं। इसी क्रम में ३३ वां पारायण यज्ञ (यजुर्वेद पारायण यज्ञ) दिनांक ६ से १२ जनवरी तक सोत्साह संपन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानंद जी दिल्ली, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद, श्री जीववर्धन शास्त्री, बांसवाड़ा, डा. सीमा श्रीमाली, चित्तौड़, पंडित नरेश दत्त जी आदि विद्वान् उपस्थित थे। निरंतर ऐसे भव्य तथा अति आवश्यक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए डा. सोमदेव जी व उनके परिवार की जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

सेवानिवृत्ति के अवसर पर शुभकामनाएं

न्यास के गठन के साथ ही इससे जुड़कर निरंतर ३० वर्षों तक प्राण-प्रण से महर्षिवर देव दयानंद की इस पवित्र कर्मस्थली नवलखा महल, उदयपुर को सजाने, संवारने व विकसित करने, यहाँ के सभी कार्यक्रमों और प्रकल्पों को एक मिशनरी की भावना के साथ निष्ठापूर्ण पुरुषार्थ से पल्लवित करने में सत्यनिष्ठ श्री सुरेश जी पाटोदी ने व्यवस्थापक एवं लेखाकार के रूप में जो सहयोग किया है वह शब्दातीत है।

आज उनके अवकाश-प्राप्ति के अवसर पर हम यह जानते हैं कि न्यास को उनके अनुभव, समर्पण और कार्यदक्षता से परिपूर्ण सहयोग का अभाव ही सदैव अनुभूत होगा, परन्तु अवस्था-विशेष पर अवकाश प्राप्ति आवश्यक भी है, यह भी स्वीकार करना ही पड़ता है।

हम श्री सुरेश पाटोदी जी को उनके अनुपम सहयोग हेतु न्यास की ओर से धन्यवाद देते हुए, प्रभु से उनके निरामय दीर्घायुष्य और मंगलमय पारिवारिक जीवन की कामना करते हैं। **-न्यास परिवार**

अजय सहगल जी डी.ए.वी. सचिव मनोनीत

टंकारा ट्रस्ट के महामंत्री, आर्य नेता अजय सहगल को डी.ए.वी. प्रबंधकर्तृ सभा का सचिव मनोनीत किया गया है। भाई अजय सहगल जी को न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

-अशोक आर्य

यज्ञ, योग और आयुर्वेद से ही विश्व शांति संभव- स्वामी आर्यवेश

अंतर्राष्ट्रीय लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री का जन्मोत्सव हर्षोल्लास से संपन्न

वैदिक संस्कृति के तीन मुख्य स्तम्भ 'यज्ञ, योग और आयुर्वेद' आज की इस विषम कोरोना परिस्थितियों में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं, जिनके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व लाभ ले रहा है। यह विचार स्वामी आर्यवेश जी ने अध्यात्म पथ (पंजी.) मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित विशाल वैदिक सत्संग, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह में व्यक्त किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिदेव रामधनी जी प्रधान, आर्य सभा मारीशस रहे। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रपौत्र श्री विश्राम वाचस्पति (पूर्व फीचर संपादक दैनिक हिंदुस्तान) सारस्वत अतिथि रहे। विशिष्ट आतिथियों की श्रृंखला में पू. स्वामी आर्येशानन्द जी, श्री ओम सपरा, श्री अवनीश मैत्रिः, श्री रविदेव गुप्त, श्री जितेन्द्र तायल, श्री दीक्षेंद्र आर्य आदि गणमान्य जन एवं विभिन्न देशों के प्रतिष्ठित गणमान्य आर्यों ने इस महा वैदिक सत्संग की शोभा को बढ़ाया। **कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान एवं उनके सहयोगी ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी को विशिष्ट मानव रत्न सम्मान से विभूषित किया गया।** कार्यक्रम के अंत में इस आयोजन से जुड़े सभी आयोजकों, संयोजकों, उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं आर्य श्रोताओं का हार्दिक आभार वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर के सह-संयोजक श्री अवनीश मैत्रिः ने किया। **- अवनीश मैत्रिः, सह-संयोजक, वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर**

आर्यसमाज हिरणमगरी की अनुकरणीय पहल

जैसा कि आर्यजनों को विदित है कि ऋषिवर की पावन कर्मस्थली नवलखा महल, उदयपुर में जीणोद्धार,सौन्दर्यीकरण और नवीन प्रेरक प्रकल्पों के क्रम में लगभग ६५ लाख रुपये के कार्य चल रहे हैं जो पूर्ण होने के करीब हैं। **पूज्य श्री दीन दयाल जी, कलकत्ता और माननीय श्री सुरेश जी आर्य, अहमदाबाद के ३० लाख रुपये के सहयोग से त्रिआयामी चल-चित्रालय और भव्यतम संस्कार वीथिका परिसर का निर्माण हो चुका है।** अब इस वीथिका परिसर में १६ संस्कारों की जीवंत झांकी बन, प्रकाश एवं ध्वनि माध्यम से संस्कारों के महत्त्व के दिग्दर्शन का कार्य शेष है। अनुमानतः एक संस्कार पर औसतन ५ लाख रुपये का व्यय आएगा। अतः निश्चय किया है कि **जो भी दानी उदार महानुभाव ३ लाख रुपये वा अधिक प्रदान करेंगे वह संस्कार उनके नाम से प्रायोजित किया जाएगा।** इस क्रम में डा. सुखदेव चंद सोनी, शिकागो ने ५ लाख रु. देकर शुभारम्भ कर दिया है। श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य समाज भीलवाडा, आर्यसमाज,कोटा ने पहले ही अपना भाग सुनिश्चित करा दिया है। इसी क्रम में **आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर ने भी अत्यंत उदार भाव से ३ लाख रुपये प्रदान करने का निश्चय किया है।** इन सभी महानुभावों और संस्थाओं के प्रति, न्यास की कल्पनाओं को पंख प्रदान करने के लिए, हम शब्दांजलि के अतिरिक्त और क्या कर सकते हैं। **बहुत-बहुत आभार।** अब शेष ११ संस्कारों के लिए संपन्न आर्यसमाजें एवं आर्यजन मन बनालें तो इस अद्भुत संस्कार वीथिका के प्रदर्शन में क्या देर रह जायेगी। **-अशोक आर्य**

हलचल

सुप्रसिद्ध लेखक डा. अशोक आर्य का आकस्मिक निधन

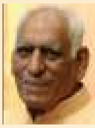

आर्यजगत् के जाने माने लेखक डा. अशोक आर्य का आकस्मिक निधन गाजियाबाद में हो गया। डा. अशोक आर्य का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शोक संवेदना प्रकट करते हुए हम परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करने व शोकसंतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं। -भवानीदास आर्य, मंत्री

मा. नंदलाल जी का निधन

उदयपुर के वरिष्ठतम आर्य सदस्यों में से एक सहज, मधुर, समर्पित व्यक्तित्व के स्वामी मा. नंदलाल जी का निधन उदयपुर के सभी आर्यों के निकट अत्यंत दुखद है। नंदलाल जी सदैव स्व सामर्थ्य के अनुरूप न्यास के सभी कार्यों में सहयोग प्रदान करते थे। न्यास परिवार आने वाले समय में उनकी कमी अवश्य अनुभव करेगा। हम परमपिता परमात्मा से न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज कोटा संभाग के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा 'हाड़ौती गौरव' सम्मान से सम्मानित

कोटा ६ जनवरी। कोराना काल में किए गए जनकल्याणकारी कार्यों के लिए कोरोना योद्धा के रूप में आज आर्य उप प्रतिनिध सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा को कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा व अन्य मंचासीन अतिथियों ने अभिनंदन पत्र देकर व माला पहनाकर 'हाड़ौती गौरव' सम्मान से सम्मानित किया। आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रचार मंत्री आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि न्यू कोटा इंटरनेशनल सोसायटी के तत्वाधान में महावीर नगर प्रथम स्थित सनाढ्य सामूदायिक भवन में विभन्न क्षेत्रों में सेवा व अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए हाड़ौती गौरव सम्मान का आयोजन किया गया जिसमें अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य कार्यकर्ताओं द्वारा कोरोना काल में १०० दिन निरंतर सेवा कार्य जैसे कच्ची बस्तियों में भोजन, खाद्यान्न किट, नाश्ते के पैकेट, कपड़े, पलायन करते परिवारों को भोजन, नाश्ता, बच्चों के लिए बिस्कुट, चिप्स के पैकेट, भीषण गर्मी में नंगे पैर जा रहे पुरुषों-महिलाओं को चप्पलें पहनाना, रास्ते में बिछाने के लिए चादरें, धूप से बचाव के लिए छतरियां व तौलिए देना आदि कार्य किए। कोरोना काल में जान हथेली पर रखकर सेवा करने वाले लोगों का सम्मान किया गया जिसमें आर्य समाज के अर्जुनदेव चड्ढा को 'हाड़ौती गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया। -अग्निमित्र शास्त्री

भूल सुधार

सत्यार्थ वीथिका (नवीन प्रकल्प) हेतु कोटा के श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने रुपये ५१०००/- प्रदान किए हैं। परन्तु जनवरी अंक में भूलवश ५१००/- रूपये मुद्रित हो गए है। भूल के लिए हमें खेद है। -संपादक

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल पुनः आरम्भ

चित्तौड़गढ़ स्थित पद्मिनी आर्ष गुरुकुल इसके अधिष्ठाता पूज्य स्वामी ओमानंद सरस्वती जी के निधन के पश्चात् बंद ही हो गया था। तभी से आर्यजनों और गुरुकुल से जुड़े सभी शुभेच्छुओं के मन में अभिलाषा थी कि यह गुरुकुल पुनः प्रारम्भ हो और इस क्षेत्र में कन्याओं को आर्ष-पाठविधि सुलभ हो। परन्तु यह कोई सहज कार्य नहीं था। क्षेत्र के आर्यों के निवेदन पर इस कार्य का बीड़ा संभाला, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. सोमदेव जी शास्त्री ने। आधारस्तंभ के रूप में सहयोगी भूमिका में श्री देवेन्द्र शेखावत तथा डा. सीमा श्रीमाली एवं जीववर्धन जी शास्त्री का पुरुषार्थ रहा। २ जनवरी २०२१ को अनेक विद्वानों, गुरुकुल के आचार्यों तथा आर्य नेताओं के सानिध्य में लगभग १० बच्चियों और एक आचार्या के साथ इस महनीय गुरुकुल का शुभारम्भ हो गया है। इस अवसर पर डा. सोमदेव जी, श्री शेखावत जी तथा डा. सीमा श्रीमाली विशेष धन्यवाद की पात्र हैं जिनके संकल्प इस पवित्र कार्य की नींव बने हैं। -नारायण मित्तल

भव्य अतिथि शाला एवं स्वागत वीथिका का मार्ग हुआ प्रशस्त

आज न्यास के अनन्य स्नेही (स्मृति शेष) श्रीमान् घनश्याम सिंह जी कृष्णावत के सुपुत्र श्री वीरमदेव सिंह जी कृष्णावत एवं यदुराज सिंह जी कृष्णावत ने नवलखा महल का अवलोकन किया तथा महाराणा सज्जन सिंहजी का भव्य तैल चित्र आर्यावर्त चित्र दीर्घा हेतु भेंट किया। नवलखा महल, उदयपुर में चल रहे विकास कार्यों की विशेष रूप से ३ डी थियेटर तथा संस्कार वीथिका के प्रकल्प की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए निज योगदान हेतु सकंल्पित होते हुए दोनों बन्धुओं ने अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में नवलखा महल स्थित अतिथिशाला के सभी कमरों के पूर्ण जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण, स्वागत कक्ष बुक स्टॉल सौन्दर्यीकरण की अभिलाषा प्रकट की। श्री वीरमदेव कृष्णावत जी ने उसी समय अपने आर्कीटेक्ट जी को अपनी भव्य मेवाडी शैली में उक्त कार्य को कराने के निर्देश दिए। इस अवसर पर न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, कार्यालय मंत्री श्री भंवरलाल गर्ग, जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़ उपस्थित रहे। न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कृष्णावत बन्धुओं का ओम दुपट्टे तथा पगड़ी पहनाकर सत्यार्थ प्रकाश व श्रुति सौरभ उन्हें भेंट कर, उनका स्वागत किया। हम न्यास की ओर से नवलखा की विकास यात्रा में श्री कृष्णावत बन्धुओं का उनके योगदान हेतु हार्दिक आभार प्रकाशित करते है। -अशोक आर्य

सत्यार्थ-पीयूष

प्रार्थना - ईश्वर से ही करें

पुनः एक बार समझ लें कि जो जो गुण परमात्मा में हैं उनका ध्यान, कथन ही सगुण स्तुति है (न कि ईश्वर को साकार कहना)- जैसे-

स्तुति परमेश्वर की ही करें

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृतं भोजन।
अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन।।

- ऋ. १/४४/८।।

विद्वानों को, सबके रक्षक, मोक्षप्रदाता, विद्या, काम तथा आनन्द के दाता और सेवन करने योग्य परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य की ईश्वर रूप में आश्रय अथवा स्तुति कभी नहीं करनी चाहिये।

वह परमात्मा सबमें व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान्, जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेश्वर उसकी जीवरूप सनातन, अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति....। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

इसी प्रकार ऐसे गुण जो परमेश्वर में नहीं हैं उनका ध्यान करना, कथन करना निर्गुण स्तुति है। जैसे- 'वह कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिसमें क्लेश दुःख अज्ञान कभी नहीं होता इत्यादि.....।'

प्रार्थना-प्रार्थना किस से करें? यह प्रश्न सर्वप्रथम उपस्थित होता है जिसका सीधा सा उत्तर है कि जिस वस्तु की प्राप्ति हेतु अथवा प्राप्ति में जिससे सहाय की अभिलाषा है वह उस व्यक्ति के पास अवश्य होनी चाहिये जिससे प्रार्थना कर रहे हैं। अन्यथा उलटा भी हो सकता है। कल्पना कीजिये आप धन की याचना किसी धनिक से न करके एक भिखारी से करते हैं तो वह आपसे उलटा पैसे मांग लेगा और आपको अपने पल्ले से धन भी देना पड़ सकता है। अतएव ईश्वर से प्रार्थना के संदर्भ में पाठकों को गंभीरतापूर्वक चिन्तन करना चाहिये कि जगत् में तीन ही सत्ता हैं। प्रकृति, जीव और परमात्मा। प्रकृति केवल सत् है अर्थात् उसका अस्तित्व है पर वह न चित् (चैतन्य) और न उसके पास आनन्द है जीवात्मा सत् है, चित् है पर आनन्द से रहित है और उसी का अभिलाषी है। उसके सभी प्रयत्न आनन्द प्राप्ति की इच्छा से ही जुड़े है। परमात्मा सत् चित् तो है ही साथ ही आनन्द का भण्डार है। अब आप विचार करें कि आपको आनन्द चाहिये तो किस से प्रार्थना करनी चाहिये? परमात्मा से अथवा प्रकृति से निर्मित जड़ पदार्थों से। स्पष्ट है कि परमात्मा से। जड़ वस्तुओं से मांगने में तो ऊपर के उदाहरण के अनुसार हमारी अपनी चैतन्यता खोकर जड़ता का ग्रहण होना संभव है। **अतः धन, अन्न, बल, बुद्धि किसी भी वस्तु की याचना इनके अनन्त भंडार परमात्मा से ही करनी चाहिये अन्यथा मृग मरीचिका में भटकना मात्र ही होगा।**

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद

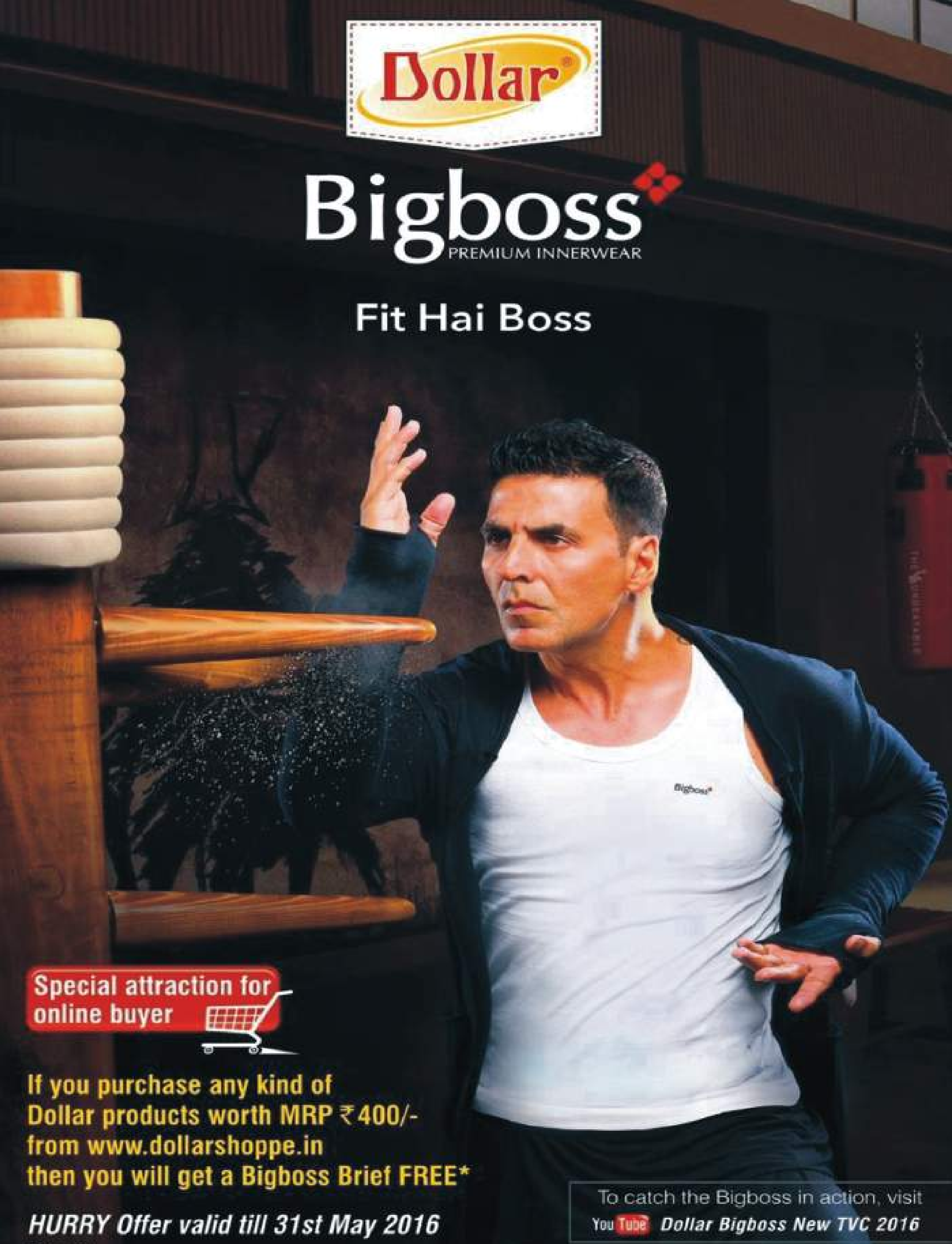
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Special attraction for online buyer
If you purchase any kind of
Dollar products worth MRP ₹400/-
from www.dollarshoppe.in
then you will get a Bigboss Brief FREE*
HURRY Offer valid till 31st May 2016
To catch the Bigboss in action, visit
YouTube Dollar Bigboss New TVC 2016

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April2020-January2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं, जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई। वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं, जैसे हंसों के बीच में बगुला।

– सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास पृष्ठ ३६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर